हिन्दीकी-तीसरीपुस्तककी-
विषयानुक्रमणिका.

श्रीगणेशाय नमः ॥

हिन्दीकी-तीसरी पुस्तक.

१—पाठ.

(इष्टवंदना १यनें.)

दोहा-शुभगुणयुतदूषणरहित, सद्वक्ता सर्वज्ञ॥
वीतरागबाधारहित, करोमोहिंलखिअज्ञ १॥
यह संसार असार है, महादुःखकी खान ॥
सारतुम्हारीभक्तिहै, यहमें लखीनिदान॥२॥
विनाप्रयोजन भानुज्यो,सहज प्रकाशकरंत॥
त्योंतुमबिनस्वार्थप्रभु, बोधविधानकहंत३॥
विभव वीर्य आधार यश,वीतरागताज्ञान ॥
इनषट्भगयुततुमप्रभु,होसार्थकभगवान ४॥
मानी मायावी कुधी, भव भटकावनहार ॥
कामक्रोधीकोजपै, ते शठ महागंवार ॥५॥

यासे गुणलखिकेनमों, तुमचरणोंतल नाथ॥
भवभटकनसेमुक्तहो,बसोंतुम्हारेसाथ ॥ ६ ॥
देत न तुमगुणघटतहैं, अक्षय सुगुण निधान॥
ज्योंदीपकसेजोवते,दीपकदीप्तिनहान ॥७॥
सहज तुम्हारे गुणजपे,सिद्धि होत सबकाम॥
त्रिविधशुद्धतासेजपें, यासे नाथूराम ॥ ८ ॥

२–पाठ.

जुएकी बुराई।

दुर्व्यसन = खोटा काम	वेश्या = पतुरिया
फोकट = सेंत	प्रवृत्ति = बर्ताव
असर =गुणचिह्न	दुर्गति = नरक
मद्य = शराब	धिक्कार = लानत

जुआ यह सर्व दुर्व्यसनोंका पिताहै।अर्थात
और सर्व दुर्व्यसन इससे उत्पन्न होतेहैं।
यथा–जुएमें हार हुई तो जुवारी चोरीकरता
है। बच्चोंका जेवर उतार उन्हें मारडालताहै।
यदि जुएमें जीता तो फोकटका धन हाथ
लगनेसे वेश्याके पास जाता है। वहां

जानेसे मद्य पीने, मांस खाने लगताहै। यदि वेश्या न मिले तो परस्त्री रमण करता है। धनवान्‌का लड़काभी हो परंतु हारने- पर चोरी अवश्य करता है। पहिले घरका द्रव्य, गहना, वर्तन, वस्त्र, जिन्स चुराताहै। परंतु न मिलनेपर पीछे दूसरे लोगोंकी चोरी करता है। और पकड़ जानेपर गाली मार खाता, कैद पड़ता और पुरुषोंका नाम धरा- ता है। कैसेही बड़ेकुलका वा धनवान्‌का बालक हो परंतु नीचलोगोंकी संगतिसे नीच कर्मोंमें प्रवृत्त होजाता है। झूंठ बोलना, गा- ली देना व खाना तो पान सुपारीके माफि- क एक प्रशंसनीय काम गिनता है। बाल- कोंको सचा जुआ तो क्या? झूंठा जुआभी न खेलना चाहिये। और न जुएका तमाशा दे- खना चहिये। कारण कि, कुसंगतिका असर शीघ्र होजाता है. जुवारीकी दुर्गति

करनेसेजोमरनेपर होगीसो तो होहीगी,परंतु यहां जीतेही बहुत कुछ कुगतिहोतीहै। जुवारीका कोई भला आदमी विश्वास नहीं करता। सब यही चाहते हैं कि यह दूरही रहे तो अच्छा है. घरकी स्त्रीभी उससे घरका धन जेवरादि छिपाती हैं। इससे ऐ विद्यार्थियो! तुम कभीभीऐसेदुर्व्यसनकी इच्छा न करो। देखो राजा नल और पांडव जुएमें राजपाट वस्त्राभरणादि सर्वस्व हार भूखे, नंगे, गली २ वन २ भटके और पराये सेवक बने. धिक्कार है ऐसे दुर्व्यसनको और इसमें रमनेवालोंको इससे बचनेमेंही परमकल्याण है॥

३-पाठ.

संसारमें मध्यम अवस्थाही उत्तम है।

अवस्था = उमर, दशा	पूज्य = मान्य
अशक्त = दुर्बल	पौरुष = पराक्रम
न्यून = थोड़ा	स्थूल = मोटा

जलमे बसे मगरसे वर

उन्नति = वृद्धि, बढती   स्वादिष्ट = मजेदार
गन्ना=सांटा, पौंडा   विपरीत = उल्टा.

देखो यह प्रगट देखनेमें आताहै कि, बाल वृद्ध अवस्था अशक्त, पौरुषहीन, न्यून-ज्ञान, विचार रहित, पराधीन आदि दूषण युक्त हैं। और तरुण अवस्था इसके विपरीत सर्व प्रकारसे पूज्यहै. तरुणपनमें बल, पौरुष, ज्ञान, विचार, उद्योग, धैर्य आदि सर्व गुण उन्नतिपर रहतेहैं. इसी तरह गन्नाका अगोला अर्थात् बांड और जरौला दोनों निरस निःस्वाद और मध्यम भाग रसीला नर्म मिष्ट स्वादिष्ठ होताहै। ऐसेही निर्धन मनुष्य तो खानेको भोजन, पहिरनेको वस्त्र, रहनेको अच्छा मकान, रोगमें यथोचित दवा, समाजमें आदर न मिलनेसे दुःखी रहता है। और अधिक धनवान् धनकी रक्षा करनेमें तथा अभिमानीहो अनेकशत्रु बढा लनेसे दुःखी रहताहै। तथा चोर, डाकू

और अन्यायी राजाओंसे भयभीत रहताहै.
और मध्यम धनवाला दोनों आपदाओंसे
रहित सुखी रहताहै । इसीतरह बहुत दुर्बल
पतला मनुष्य जो एक दिनके बुखारमें
बँदरियाके बच्चेकासा मुख होजानेवाला धक्का
लगनेही तीन कुलाचे खानेवाला शोकित
दुःखीरहताहै और ऐसास्थूल जो कष्टसे उठे
बैठे और हाथ न पहुँचनेसे दूसरोंसे गुदा
धुलानेवालामैलभर चलनेसे भैंसासा हाँफता
सोभी अत्यन्त दुःखी रहता है। परंतु मध्यम
सुडौल शरीरवाला इन दुःखोंसे बचता और
सुखी रहता है। ऐसेही बहुत लंबा लमूरसा
[illegible] अवस्था आनेही कमर झुक जानेसे
दुःखी रहता है और बहुत छोटा बौना कठ-
पुतलीसा जिसका दश पन्द्रह वर्षके बालक
भी अदब न करने व डर न रखनेसे दुःखी
रहताहै । परन्तु मध्यम ऊंचाईवाला बुढापनक
बलिष्ठ और सुडौल रहता है। ५४२. अनेक

उदाहरणहैं कि, जिनसे बखूबी निश्चय होता है कि अनेक विषयोंमें पुरुषोंकी मध्यम अवस्थाही उत्तम है ॥

४-पाठ.

अखबारोंसे लाभ।

विचित्र = अनूठे   शक्त्यनुसार = हैसियतमाफिक
विज्ञापन = इश्तिहार   गवर्नमेन्ट = राज्य
अमुक = फलाने (फलां)   महाशय = सुजन, बडेआदमी
अतीव = बहुतही   बलवा = गदर

अखबारोंसे संसारमें अनेकप्रकारकेलाभ हैं परंतु उनमेंसे कुछ थोडे यहां लिखे जाते हैं। प्रथम तो अखबारोंमें अनेक प्रकारके विद्वानोंके दिये हुए लेख पढ़नेसे सर्वप्रकार-की लिखने, पढ़ने और बोलनेकी योग्यता होजातीहै। दूसरे दूरदेशोंके विचित्र नवीन २ समाचार और अनेक महाशयोंके चित्र घर बैठे देखनेको मिलाकरते हैं। हर कोई अपना दुःख गवर्नमेन्टको सुना सक्ताहै। अथवा अपनी इच्छा अनेक लोगोंमें प्रगट करनेका

है ।सौदागरीकी वस्तु हरजगहकी जानसक्ता है और अपनी सबको प्रकाश करसक्ता है। देखो कैसे२विज्ञापन लोगअखबारोंमेंदेतेहैं। जिनके द्वारा घरमें बैठे२ अपना माल बेंचा करते हैं और बहुत कुछ लाभ उठाते हैं। यदि वे लोग अखबारोंमें खबर न देते तो दूर देशोंके लोग क्या जानते कि, अमुक महाशय किस शहरके किस मुहल्लेमें रहतेहैं और क्या कार करते हैं । देखो जहां कहीं अकाल पड़ता है या लड़ाई झगड़ा होताहै, सब ब्यौरेवार समाचार घर बैठे विदित होजातेहैं । यदि वर्तमान समयके मुवाफिक सन् १८५७ई० में अखबार छपते होवे तो ऐसा भारी बलवा क्यों होने पाता । तुरंत गवर्नमेन्टको प्रगट करदिया जाता अखबारोंसे राजा और प्रजादोनोंको अतीव लाभ है।परंतु इस लाभको वे भोंदू निखट्टू क्या जानें, जो अखबारोंका पढना सुनना व्यर्थ

समझते हैं। और ऐसे कार्यमें द्रव्य खर्चना भाडमें झोक देना मानते हैं। अखबार वाले नित्यप्रति राजा प्रजा दोनोंको सचेत किया करतेहैं और उनको आनेवाली आपदाओंसे बचाते हैं. इसलिये सबको उचितहै कि, अपनी २ शक्त्यनुसार अवश्य अखबार पढैं और लाभ उठावैं॥

५—पाठ.

हरवस्तुकी चाह मीठी है।

धन्यवाद=यश	प्रत्यक्ष=जाहिर
प्रिय=प्यारा	कष्ट=दुःख
नशा=अमल	तोफा=अच्छी
शख्स=आदमी	मान्य=मंजूर

प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि, हर एक वस्तुकी चाहही मीठी है। देखो जो शख्स किसी भी प्रकारका नशा करते हैं. यदि उनसे कहो कि. तुम चारदिनको यह नशा छोड दोः हम चार दिन खूब तोफा मिठाई खिलावेंगे। तो वे कभी प्रसन्नतासे मान्य न

ाह नहीं रहती,तब वह चाहेघरबैठेहीसामने ावे तो भी उसे प्रेमपूर्वक नहीं देखते । इससे प्रगट होताहै कि संसारमें कोई स्तु हो चाह होनेहीसे मीठी होती है; यदि मीठी वस्तुही मीठी लगती तो सब लोग सदा मिठाई खाते और कभी उससे अरुचि न करते । सो कोई खट्टी, कोई नमकीन, कोई चरफरी, कोई कडवीके अभिलाषी व रुचिया रहते हैं । इससे हर वस्तुकी चाह ही मीठी है ॥

६—पाठ.

अकबर बादशाह ।

प्रशंसनीय = तारीफके लायक — जवाँमर्दी = [illegible]
यशस्वी = कीर्तिमान् — विघ्न = उपद्रव
धार्मिक = धर्मात्मा — प्रतिष्ठा = इज्जत
विपत्ति = कष्ट — [illegible] = [illegible]

यह प्रशंसनीय यशस्वी,नामवर, धार्मिक और साहसी बादशाह १४ अक्टूबर सन १५४२ में अमरकोटमें बडीविपत्तिके दिनों

ता दी। और उन राजाओंको अपना कृपापात्र कर हितकारी बनाया। वरन् हिंदुओंको प्रसन्न रखनेके हेतु उनके पर्व, त्योहार, व्रतोंमें मांसादि अभक्ष्य वस्तु नहीं खाता था। और किसीके धर्मकार्यमें विघ्न नहींहोनेदेता था वरन् उन्हें सहायता देता था.

राजा टोडरमल और बीरबल ये सभासद नामी मुसाहिब थे हरएक कार्यमें शुभसम्मति देतेथे। अकबरका शरीर गोरा: सुडौल और फुर्तीला था, चालीस मील बराबर पैदल चलसकाथा. और गंगा यमुना तो कईबार तैरकर पार निकला था। समय विभाग ठीक रखनेके कारण राजप्रबंधके सिवाय खेल तमाशे व विद्या विलासको भी उसे बहुत समय मिलताथा। खेल भी हाथीघोडोंका फेरना. शेरोंको मारना ऐसे खेलना था जिनसे शारीरिक शक्ति और हिम्मत बढतीहै। गोस्वामी तुलसीदासजी इसी समयमें हुए

न न होता तो हिंदुस्थानमें देवता करके पूजा जाता । सच है ऐसेही सौम्य प्रकृति-वाले मनुष्यही प्रजाहितैषी राजा बादशाह चाहिये । जिससे राजा प्रजा दोनोंही सुख पावें और प्रेमपाशमें बँधे रहें ॥

७–पाठ.

धन ।

सदुपयोग=उचितकामकरना	उच्च=ऊंचा
धर्मेच्छुक=धर्मको चाहनेवाले	युद्ध=लड़ाई
तृष्णा=अधिकचाह	हत्या=हिंसा
तिरस्कार=निरादर	दुस्सह=असह्य

प्रथम यह विचार करो कि, धन क्या पदार्थ है और कैसे पैदा होता है? और उससे कैसे २ काम हो सकते हैं, जब इतना जानलो तब पीछे उसे उपयोगमें लाओ। धन वह सर्वोपरि बलवान और मनमोहन पदार्थ है कि, जिसके लिये लोग कठिन २ दुस्सह और कलंकित कार्य करनेमें भी नहीं रुकते। जैसे सिपाही धनहीके

मार्गोमें कूपादि व छायाको बडे२वृक्षतैयार
करावें तथा संतोपी भोजनमात्र ग्रहण कर-
नेवाले परोपकारी साधुओंकी सेवामें धन
खर्चना, धर्मसाधनके लिये ऐसे स्थान
बनाना, जहाँ अनेक धर्मेच्छुक धर्मसाधन
करसके। नानाप्रकारके कठिन धर्मग्रंथोंको
सरल कराके शुद्धतापूर्वक बनाकर सबकेउप-
कारके हेतु बाँटें। इत्यादि अनेक प्रकारके
शुभकार्योमे सुकृतिकी कमाईकाधन खर्चना
चाहिये। वैसे तो धनकी अधिक तृष्णाभी
राजरोग है। क्योंकि मरनेपर यह सबधन
यहाँही रह जाता है. केवल दान पुण्यऔर
परोपकारमें लगनेहीसे सफल होता है।
और वही धन अपना है जो सुदान सुभो-
गमें लगे और सद्व्ययका धनही साथ
जाता है अर्थात् जहाँ यह पैदा होताहै
तहाँही धनप्राप्ति होजाती है। प्रत्येक मनु-
ष्यकी जिंदगीभरको भलेप्रकार खाने ·[

रने आदि खर्चको बीसहजार रुपये बस होतेहैं। फिर लाखों करोडोंकी सम्पत्ति तृष्णा कर एकत्र करना और सदुपयोगमें नहीं लगाना यह बडी मूर्खता है ॥

८–पाठ.

वचन विवेक (पद्यमें)

धूर्त = छली — भ्रष्ट = छुटाहुआ
जंबुक = स्यार — स्वार्थ = मतलब
कपि = बंदर — श्वश्रू = स्त्रीकी माता
दग्ध = जलाहुआ — निश्चल = अचल

दोहा-ध्यानएकसेपढनदो; गानात्रयपथचार
खेती पांचरु युद्ध बहु; करते भले प्रकार॥१॥
छेद तपा घिस पीटना, हेम परीक्षा चार ॥
तथा पुरुषके चारहैं; गुणसति शीलअचार२॥
नौवा धूर्त नरोंमें, मालिनि त्रियमें जान ॥
[illegible]। धूर्तपक्षीनमें, जंबुक कपि पशुम्यान२॥
[illegible]धन यौवन [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] क्षणभंगुर धर्म इक [illegible] निश्चलमो[illegible] ॥

चौपाई ।

विद्या बंधु जीविका आदर। नदी वैद्य पंडित राजावर॥ धनी कुशलता नीति जहांना। बसो न एकहु दिवस तहां ना॥ निर्द्धनको वेश्या परित्यागें। दग्ध बनै लखि मृग तजि भागें॥ निष्फल तरुको पक्षी छोड़ें। विप्र दक्षिणा ले मुहँ मोड़ें॥ निर्बल राजहि तजें प्रजाजन। राजभ्रष्ट नृपको मंत्रीगण॥ भोजन पाय अतिथि गृह त्यागें। सूखे सरसे सारस भागें॥ नीरस पुष्प भ्रमर तजदेवें। विद्याले गुरुशिष्य न सेवें॥ स्वारथको सब प्रेम बढावें। स्वारथ भये पास ना आवें॥ दोहा–रानी गुरुनी मित्र त्रिय, सासु और निज मात। पांचों सम माता कहीं, नाथूराम विख्यात॥

९–पाठ.

पाट = चौडाई	माहात्म्य = बडाई
स्वच्छ = निर्मल	कल्पना = मानलेना

गंगाजी यह हिन्दुस्तानमें प्रधान नदी है
इसका निकास हिमालयपर गंगोत्री ना
स्थानसे है। जो भूमिसे चौदह हजार फीटक
उँचाईपर है। जो निकासपर इसकी धार
गज चौडी और गजभर गहरी है ॥ औ
पहाडपर ऊँची नीची सघन वृक्षोंवारी भयं
कर जगहोंमें वक्रगति वहती हुई पहाड
नीचे आकर हरिद्वारके पास फैलगईहे। औ
ज्यों २ आगे२वढती गई है, चौडी औ
गहरी होतीगईहै। अनेक सहायक नदि
योंसहित १६०० मील बहकर पांच कोसके
पाटसे सहबाजपुरके टापूके सामने बंगालके
उपसमुद्रमें गिरीहै। दाहने किनारेसे बडी
नदी यमुना,सोन और बांये किनारेसे काली
सिंध,गोमति, सरयू निशा, कोशी, गंडकं
आदि हैं और छोटी २ तो सैकडों हैं। गंगाके
किनारेपर हरिद्वार, कनखल, गढमुक्तेश्वर,

अनूप शहर, सोरों, फर्रुखाबाद, कन्नौज, बिठूर, कानपुर, इलाहाबाद, मिरजापुर, चूनारगढ, काशी, गाजीपुर, पटना, मुंगेर, भागलपुर, बलिया, आदि बडे २ शहर हैं। गंगाके जलसे असंख्यबीघे जमीन सींचीजाती है। और इसकी धारमें बडी२ नावें चलनेसे व्यापारियोंको दिशावरसे माल भेजने मँगानेमें बहुत लाभ होता है। इसका पानी स्वच्छ और निरोग है किनारेकी धरणी बहुत उपजाऊ है। इसके किनारे बडे२ मेले लगते हैं इनसे व्यापारमें बडा लाभ होता है। गंगा इस लोकमें सुख और परलोकमें मोक्ष देनेवाली है। पहले लोग कलियुगके ५००० वर्ष पूर्ण होनेतक गंगाकी आयु मानतेथे-परंतु अब शास्त्रोंसे निश्चय होगया है कि गंगाजीका कभी लोप न होगा गंगाजीमें स्नान करनेसे शरीरकी और भक्ति करनेसे अन्तः-करणकी पवित्रता होती है. सारांश गंगाजी मोक्षदायिनी है ॥

१०-पाठ.

श्रीमती महाराजेश्वरी विक्टोरियाजीका जीवनचरित्र ।

ज्येष्ठ = सबसे बड़ा अस्त = छुपना
सिधारे = गये विगत = ब्यौरा
तख्त = राजासन उपनाम = पदवी
विराजमान = बैठना विजय = जीत

श्रीमती महारानीजीके पितामह तीसरे जार्ज तिनके दो पुत्र हुए। ज्येष्ठ पुत्रका नाम एडवर्ड चौथा जार्ज उपनाम ड्यूकआफकेंट दूसरेका नाम चौथा विलियम् चौथा जार्ज महारानीजीका पिता सन् १८२०में परलोक सिधारा तब चौथे विलियम् तख्तपर बैठे महारानीजीका जन्म २४ मई सन् १८१९ में हुआ। जब इनके चचा चौथे विलियम सन् १८३७में परलोक सिधारे तब इंगलैंडकी राजधानी लंडनके तख्तपर विराजमान हुई। मुख्य राजस्थान तो इनका ग्रेटब्रिटेनमें शहर लंडन है, परंतु अब यह राज्य

सा वढगया है कि, सूर्य कभी भी इनके
ज्यपर अस्त नहीं होता-कारण कि,पृथ्वी-
चारोंओर अनेक देशोंमें इनका राज्य
। जब हिन्दुस्तानमें सूर्य अस्तहोनेको होता
, तब आफ्रिका संबंधी राज्यमें ३ घंटे दिन
हता है और इंग्लेंडमें दोपहर और अमेरि-
ा संबंधी राज्यमें सूर्योदय होता है। न्यू-
ीलिंड द्वीपमें आधीरात और आस्ट्रेलिया
ंबंधी राज्यमें पहरभर रात जाती है।
इससे राज्यके किसी न किसी भागमें दिन
बनाही रहता है. तख्तपर बैठनेके तीसरे साल
सन् १८४० में जर्मनी देशके सैक्सकोबर्गके
श्रीराजकुमार प्रिन्स आलबर्टके साथ, जो
अवस्थामें समान थे, विवाह किया।ये राज-
कुमार सर्वगुणसम्पन्न, सुशील, विद्वान् और
दयालु स्वभाव थे। इनके साथ२०वर्ष महा-
रानीजीके आनंदमेंव्यतीतहुए.सन्१८६१में
ये परलोक सिधारे।इस बीसवर्षकी अवधिमें

इनसे ४ पुत्र ५ पुत्रियां ये ९ सन्ता उत्पन्न हुए। उन सबकी विगत यह कि, स १८४० में पहिली पुत्री मेरीलुइसा जन १८५८में प्रूशियादेशके राजपुत्र प्रिन्स फ्रे रिक विलियम्को व्याहीगई। और दो चा संतान होनेपर सन् १८८८ में विधवा हुई फिर सन् १८४१ में आलबर्ट एडवर्ड ना पुत्र जन्मे जिनका उपनाम प्रिन्स ऑ वेलसहै। सन्१८६३में डेन्मार्क देशकी रा पुत्री प्रिन्सेस अलेक्जांड्रा व्याही, इन पांच छः संतान हुए ज्येष्ठ पुत्र आलब विक्टर हुए जो सन् १८९२ में परलोक सिधारे। सन् १८४३ में आलिस माडमेरी नाम पुत्री जन्मी सो सन् १८६२में जर्मनी देशके राजपुत्र फ्रेडरिक लुईसको व्याही गई और सन् १८७८ में परलोक सिधारी। सन् १८४४ में आलफ्रेड अर्नेस्ट आलबर्ट नाम पुत्र जन्मे, जिनका उपनाम ड्यूक ऑफ् ए·

डिम्बरो है, जो जंगी जहाजोंके सर्दार हैं। सन् १८७४ में रूसके शाहन्शाहकी बेटी व्याही। यह सन् १८६९ में हिंदुस्थानमें आये थे, सन् १८४६ में हेलेना आगाष्टा विक्टोरिया नामकी पुत्री जन्मी, जो सन् १८६६ में स्लेसविक होलस्तानके राजपुत्र प्रिन्स क्रिस्त्यनको व्याही गई. सन् १८४८ में लुइजा कारोलैना आलबर्टा नाम पुत्री जन्मी, जो सन् १८७१में मार्किस आफ लोर्न जान्डू ग्लास सुडरलैंडको व्याही गई। सन् १८५०में आर्थर विलियम् पास्ट्रिक आलबर्ट जन्मा जिसका उपनाम डयूक आफ् कैनाट है, जो अब इंग्लैंडमें हिंदुस्तान संबंधी सेनाका कमान्डर इन् चीफ् है। सन् १८७९में प्रूशियाकी लुईस मार्गारेट नाम राजकन्या व्याही, जिसके दो तीन सन्तान हुई हैं। सन १८५३में लिओपोल्ड जार्ज डंकन आलबर्ट नाम पुत्र जन्मा।

जिसका उपनाम ड्यूक ऑफ् आल्बनी है सन् १८८२में वाल्डेक पिरमौंटकी हेलन् नाम राजकन्या व्याही,एक पुत्र एक पुत्री जन्मी और सन् १८८४में कालवश हुआ। सन् १८५७में बिआट्रीस मेरी विक्टोरिया फियोदोर नाम कन्या जन्मी, सो सन् १८८५में बाटेनबर्गके राजपुत्र हेनरीको व्याही गई। ऐसी सुशील संतान सहित श्रीमहारानी विक्टोरियाजी इंग्लैंडकी राजधानी शहर लंडनमें वास करतीं थीं जिनका सार्थकनाम विक्टोरियाजी (जीतनेवाली) है इनके नामसे जहां २ सेना चढगई है, विजयही पाती रही है.सन्१८७७में जो दिल्लीमें भारी आमदर्बार हुआ था, वह महारानीको चक्रवर्ती पद (एम्प्रेस्) होनेको हुआथा। जैसे सुखके सामान भारतवासियोंको महारानीजीके राज्यमें प्राप्त हुए हैं वैसे किसी कालमें किसी राज्यमें प्राप्तनहीं हुए। नाना प्रकारकी

फल और कलाकौशल्य जो महारानीजीके राज्यमें प्रजाजनोंने सुगमतासे प्राप्त की हैं वैसी कभी किसीके समयमें प्राप्त नहीं कीं। हम सब भारतवासियोंको उचित है कि, ऐसी दयालु परमहितैषिणी महारानीजीके धन, बल, आयु, कुटुम्ब, ऐश्वर्य,और न्याययुक्त राज्यकी वृद्धिका ईश्वरसे दिनोंदिन सच्चे दिलसे प्रार्थना करते रहें । यही हमारा परम धर्म है ॥

११–पाठ.

हिमालयपर्वत ।

हिम = बर्फ	भूमंडल = पृथ्वीभरका देश
ऊंची = [illegible]	रमणीय = मनोहर
[illegible] = पवित्र	रक्षा = बचाव
सम्बन्ध = [illegible]	अनुमान = अन्दाज

हिमालय–इसको हिमाचल, हिमवान्, हिमाद्रि आदि अनेक नामोंसे पुकारते हैं और इसके सर्व नाम हिमसे सम्बन्ध रखते हैं यह पहाड संसारके सब पहाडोंसे ऊंचा और

चौडा। हिंदुस्थानके उत्तरमें सिंधु और ब्रह्मपुत्रके बीचमें जितना पहाड है असल हिमालय इतनाही गिनाजाता है। नहीं तो यह ब्रह्मदेशमें दक्षिणको झुककर क्रमसे नीचा होकर समुद्रतक चलागया है और पश्चिममें हिंदुकुश और सफेदकोह, सुलेमान, हाला जो क्रमसे दक्षिणको मुडकर समुद्रतक गये हैं वे इसकी श्रेणी हैं। दक्षिण श्रेणीसे उत्तर श्रेणी अधिक ऊंची है दोनोंके बीचमें रावणह्रदसे निकलकर सिंधु पश्चिमको और ब्रह्मपुत्र पूर्वको बहकर और दक्षिण श्रेणीको काटकर दक्षिणको बहकर सिंधु अरबसमुद्रमें और ब्रह्मपुत्र बंगालके उपसमुद्रमें गिरती है हिमालयकी उत्तर श्रेणीसे सिंधु, सतलज, और दक्षिण श्रेणीमें चनाव, झेलम, [illegible], गंगा, रामगंगा, [illegible]ण्ड-

की आदि बडी२नदी निकली हैं। जो नदी अधिक ऊँचाईसे निकली हैं वे धूपकालमें बर्फ गलनेसे भी बढ आती हैं और बरसातमें तो सबही परिपूर्ण बहती हैं। समस्त हिमालयको देखना मानो समस्त भूमंडलका देख आना है। क्योंकि इसके ऊपर हर एक प्रकारके वृक्ष, बेल आदि वनस्पति और हर एक प्रकारके पशु, पक्षी, कीडे तथा धातु उपधातुकी खानें हैं। हां यह अलबत्तः है कि, कोई२ जड़ या चैतन्य पदार्थ कहीं २ अधिकताते पाये जाते हैं, जिनके कारणसे वे स्थान प्रसिद्ध हैं। यहां थोडे हैं। मगर नमूना सबका मिलता है। इसके ऊपर ७००० फीटकी ऊँचाई तक तो बर्फ जाडेमें कहीं २ कुछ२ पडती है और ७००० से १४००० फीट तक की ऊंचाईपर जाडेमें बहुत पडती है। और १४०००फीटसे अधिक ऊंचे पहाड़पर सदाही छाई रहती है। बद्रीनाथ,केदा-

चौडा। हिंदुस्थानके उत्तरमें सिंधु और ब्रह्मपुत्रके बीचमें जितना पहाड है असल हिमालय इतनाही गिनाजाता है। नहीं तो यह ब्रह्मदेशमें दक्षिणको झुककर क्रमसे नीचा होकर समुद्रतक चलागया है और पश्चिममें हिंदुकुश और सफेदकोह सुलेमान, हाला जो क्रमसे दक्षिणको झुककर समुद्रतक गये हैं व इसकी श्रेणी हैं। दक्षिण श्रेणीसे उत्तर श्रेणी अधिक ऊंची है दोनोंके बीचमें मानसरसे निकलकर सिंधु पश्चिमको और ब्रह्मपुत्र पूर्वको बहकर और दक्षिण श्रेणीको काटकर दक्षिणको बहकर सिंधु अरबसमुद्रमें और ब्रह्मपुत्र बंगालके उपसमुद्रमें गिरती है। ... मानसरसे उत्तर पर्वत सिंधु [illegible] ब्रह्मपुत्र और दक्षिण [illegible]

[illegible]

[illegible]

की आदि बडी२नदी निकली हैं। जो नदी अधिक ऊँचाईसे निकली हैं वे धूपकालमें बर्फ गलनेसे भी बढ आती हैं और बरसातमें तो सबही परिपूर्ण रहती हैं। समस्त हिमालयको देखना मानो समस्त भूमंडलका देख आना है। क्योंकि इसके ऊपर हर एक प्रकारके वृक्ष, बेल आदि वनस्पति और हर एक प्रकारके पशु, पक्षी, कीडे तथा धातु उपधातुकी खानें हैं। हां यह अलबत्तः है कि, कोई२ जड़ या चैतन्य पदार्थ कहीं२ अधिकतासे पाये जाते हैं, जिनके कारणसे वे स्थान प्रसिद्ध हैं। यहां थोडे हैं। मगर नमूना सबका मिलता है। इसके ऊपर७००० फीटकी ऊँचाई तक तो बर्फ जाडेमें कहीं २ कुछ२ पडती है और ७००० से १४००० फीट तक की ऊँचाईपर जाडेमें बहुत पडती है। और १४०००फीटसे अधिक ऊंचे पहाडपर सदाही छाई रहती है। बद्रीनाथ,केदा-

फीट बनारसके उत्तर। नेपालमें नंदादेवी २६००० फीट ऊंची कमाऊ के उत्तर में किन्चिन्चिगा २८१५६ फीट ऊंची शिकम के वायव्य दार्जिलिंगके उत्तरमें, यमुनोत्री २५५००फीट नंदा पर्वत२६६०० काश्मीरमें, पुरगिल २३००० फीटकश्मीर-के उत्तर इनके सिवाय और भी कई चोटियां हैं। पुराणोंमें जो सुमेर १००००० योजन ऊंचा लिखा है, सो गप्प है, हिमालयके समान संसारमें कोई पहाड ऊंचा नहीं है। सो यह भी लगभग ३ कोशही ऊंचा है। इससे हिन्दुस्तान की उत्तरके शत्रुओंसे रक्षा है और मेघ भी इससे पार नहीं जाते रुककर हिन्दुस्थानहीमें बरसते हैं। इसके ऊपर कश्मीर, गढवाल, नेपाल, भूटान आदि बडे २ राज्य हैं। इसका लम्बाव असली १००० कोश और चौड़ाव करीब २०० कोश है॥

१२-पाठ.

श्रीमती महाराणीकी प्रशंसा (पद्यमें)

चिरजीव = चिरकाल जीवो	सहस्रावधि = हजारों
एम्प्रेस = चक्रवर्तिनी	असन = भोजन
शिक्षालय = मदर्सह	बाधक = दुःखदेनेवाले
प्रवीण = होशियार	रिपुगण = वैरीलोग

दो०-चिरंजीव विक्टोरिया,एम्प्रेसपद धारि
शिक्षालय पुर२ किये,पढतजहां नरनारि ॥१॥
विकट राह कीनी सरल, सर्व हिंदके माहिं॥
नेत्रवानकी बात क्या,अंधे भूलत नाहिं ॥२॥
जाके राजप्रबंधमें,विविध कलोंको पाय॥अ
[illegible]

सबवस्तु पुर२ मिलें,बढा बहुत व्यापार॥८

भजन ।

श्रीमदाराणी जन सुखदानी जयय
प्रजों हितकारी ॥ टेक ॥ रिपुगण ना

सुनत जिसे कंपत जंपत सुख हम आज्ञाकारी ॥ सहस्रावधि नृप दास भये जाकी आज्ञा निज शिरपर धारी॥ श्रीमहारानी जन सुखदानी जयवंती वर्तो हितकारी॥ १॥ पुत्रसमान प्रजहि हम पाले करुणाकर जसे महतारी॥ बाधक दुष्ट मूलसे नाशे देदे दंड तिन्हें अति भारी ॥ श्रीमहारानी जनसुखदानी जयवंती वर्तो हितकारी ॥ २ ॥ प्राण प्रतिष्ठा धर्म धरनि धनकी रक्षा नित करत हमारी॥ जाके राज्य चैन जो पायो भयो न श्रवण सुनो नर नारी ॥ श्रीमहारानी जनसुखदानी जयवंती वर्तो हितकारी ॥ ३ ॥ रेल तार आदिक अपार फल जिन सुख पावत व्यापारी॥ धूप शीत वर्षा तीनों ऋतु करत पयान न कष्ट कदारी ॥ श्रीमहारानी जनसुखदानी जयवंती वर्तो हितकारी ॥ ४ ॥ आगेके इतिहास सुननहीं होन कष्ट जिमि लगनि कटारी। नित्य प्रजाको वृथा मारा हूणादिक नृप

लनेसे दृढसुख कहां ? उसके नाश होनेका
यतो सदा लगाही रहताहै। और चिंताहै
ोही दुःखहै। यदि भयभीतचिंतावान्को भी
ुखी मानें तो यह बडीही मूर्खताहै।प्रत्यक्ष
खलो कि. बहुतसे लोग धनकी इच्छासे
ःखीहैं. कारण कि मनोरथके मुआफिक
केसीके पास धन नहीं है. करोडपती भी
अर्बपती होनेकी बहुत कुछ वांछा रखता है,
समे खेदितही रहता है। बहुतेरे धनके
ंतोषी भी हैं। तो पुत्रादि नहोनेसे दुःखीहैं
अथवा रोगी होनेसे धन होनेपरभी इच्छा-
ुसार वस्तु नहीं खासकते हैं। भोग विला·
तको तरसते हैं। अथवा संतानके विनाश
ोनेसे अत्यन्त दुःखीहोतेहैं। शीत उष्ण रोग
जनित दुःखोंसे संसारी जीव प्रथमहीसे भय-
भीत कम्पित रहतेहैं अनेक प्रकारकी इष्ट व-
स्तु [illegible] वियोग और अनिष्टका संयोग
[illegible] दुःख देताही रहताहै।

मरण रोगादि भय चित्तमें सदा खटक
रहतेहैं । प्रथम तो जहां किसी वस्तुके प्र
की इच्छा है तहां दुःखही है और जब
इच्छा पूर्ण नहीं होती तब तक खेद
नहीं मिटता । फिर एक कार्यके पूर्ण होते
दूसरेकी इच्छा प्रगट होआती है यथा—
प्यास लगतेही भोजन पानीकी इच्छा हो
है और जबतक आहार पानी नहीं मिल
दुःख होता है । फिर मिलनेके साथ
किसी नशे या सोनेकी इच्छा हो आती
पहर दोपहरमें फिर भूख प्यास लगती
इसीतरह एकके पीछे दूसरी इच्छाजा
बाधा लगीही रहती है । फिर कहो सुख क
और क्या मिला । यदि संतान दुराच
हुई तो दुःखका पार नहीं । राजा, चोर, ब
माश लुटेरे, अग्नि और जहरी कीड़े आ
का अकस्मात् डर बनाही रहता है । ज
ऐसे २ कठिन दुःख विराजमानहैं तहां सु

काहेका; सुख तो मान लेनेका कल्पनामात्र है। जैसे शिरका बोझा कंधे पर लेनेसे शिरका खेद मिटा तो कंधेका होने लगा शरीर से तो बोझा अलग नहीं हुआ। इसीतरह एक न एक दुःख सबको लगाही रहता है। फिर सांचा सुख संसारमें कहां? संसारमें सुख तो कल्पनामात्रही है। केवल सुख परमेश्वरकी भक्तिमें है॥

१४-पाठ.

शुद्धाशुद्ध विचार।

बेशकीमती=बहुमोल	स्तवन=स्तुति
किस्म=जाती	निर्विघ्न=बेखटके
व्यवहारिक=इस्तेमाली	महत्कार्य=बडाकाम
अशुद्ध=अपवित्र	गुप्ताशय=भीतरीमतलब

दोषाच्छादन=ऐब ढाकना

जो विचार पूर्वक देखा जावे तो यह शरीर महा अशुद्ध है। कारण कि, माताके रक्तऔर पिताके वीर्यसे पैदा हुआ है। इसके सर्वभा-

व्यवहारिक शुद्धता निरोगताके लिये रखना अत्यावश्यक है। कारण कि, रोगीसे व्यवहारिक व पारमार्थिक कोई काम निर्विघ्नतासे नहीं सधते हैं। निरोग रहतेही मनुष्य विद्याभ्यास, व्यापार, नौकरी वा जप, तप, ध्यान, पूजन सब करसकता है। जिससे व्यावहारिक शुद्धता अवश्य रखना चाहिये। जैसे शरीर और वस्त्रोंको जल वा साबुन आदि धोने योग्य सामग्रीसे धोकर शुद्ध करना। मलीनस्थानको गोबर माटीसेलीप पोत स्वच्छ करना। मलीन बर्तनोंको भस्म माटीसे मांज धोकर चिकनांको अग्निमें तपाकर मांजकर शुद्ध करना। मकानकी दीवारों और छतोंको झरोंसे रख बाहुसे स्वच्छ रखना। इस कुलके अपरिचित मनुष्यके हाथका पकान्नान पहिचान होनेपर जब वह उत्तम आ[illegible] [illegible]नपानकर[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]गिका पानी

स्वच्छ निरोग और पाचन शक्तिवाला
उसे पीना। मैले कुचेले व नीच लोगों
स्पर्श किया हुआ ग्रहण न करना उन
स्पर्श हो तो स्नान करना। ये सब उपच
निरोगताके लिये हैं। इससे यथोचि
रीतिसे करना अत्यावश्यक है॥

१५–पाठ.

सूर्यसे परोपकार।

उपकार=भलाई	सुधार=भला
उपादान=नीरोगिसफा,	पूर्णता=[illegible]
आवश्यकता=जरूरत	कारण=हेतु
निमित्त=सबब	गर्मी=उष्णता

संसारमें ऐसा कुशल उपकार सूर्यसे होत
वैसा न किसी और पदार्थसे होताहै, न निर्ज
पदार्थोंसे होता है। कारण कि, और
पदार्थ अन्न-जल, पवन, आदि अवश्य उ
कारी मान पड़ते हैं। गर्मी सूर्यहीके कारण
[illegible] है [illegible] सूर्यकी [illegible]

जल भाफ होकर आकाशमें ऊंचा चढता और फिर सर्व भूमंडल और पहाडोंपर बरसता है जिससे खेती भली भाँति होती है। अन्न, फल, फूल, पत्ती आदि जो २ मनुष्यों और पशु, पक्षी कीट पतंगोंके खाद्य-पदार्थ हैं सब भली भाँति होतेहैं। नदियोंके द्वारा पहाडोंसे पानी बहकर किनारोंके देशोंको आर्द्र करता और पीने आदि अनेक कामोंमें आता है। यदि सूर्यकी गर्मीसे समुद्रादिका पानी भाफ होकर आकाशमें ऊपर न जाता तो पहाडोंपर वनस्पति और मनुष्य, पशु, पक्षी आदि कोई भी न जीसकते। धरतीपर भी खेती नहीं होसकती। क्योंकि प्रत्यक्ष देखनेमें आताहै कि वनस्पतिके उपजने और बढ़नेको भी सूर्यकी बडी आवश्यकता है यदि ऐसा न होता तो लोग बगीचे और खेतोंको ऐसे गुप्तस्थानोंमें लगाते कि ओले, तुषार, पक्षी, पशु, चोर आदि सब-

अजमेर कुर्गमें एक एक कमिश्नरही शासन करतेहैं॥गवर्नर जनरलको हिन्दुस्थानके सर्व राज्यसंबंधी कामोंका पूरा अख्तियार है। और कानून बनाने तर्मीम करनेका भी अधिकारहै। गवर्नरभी अपने नियतभागमें आइन कानून बदलसकते हैं और गवर्नर जनरलकी अपेक्षा नहीं रखते। परंतु लेफ्टिनेन्टगवर्नर चीफकमिश्नर कमिश्नर इनको गवर्नर जनरलकी भारीकामोंमें मंजूरी लेनी पडती है। दूसरे रक्षित राज्यहैं, जो राजा महाराजा सर्कारके अधीन रह राज्य करते हैं उनके मुख्य २ भाग ये हैं,हैदराबाद,निजाम,काठियावाड, कच्छ, बडोदा,मालवा, राजपुताना, बुंदेलखंड, बघेलखंड,कश्मीर, पंजाब, मैसूर, इनके सिवाय और भी कई छोटे २ फुटकर रजवाडे हैं। तीसरे स्वतंत्र राज्य हैं यथा–नेपाल, भूटान ये सर्कारको न कुछ देते हैं और न सर्कारकी इनपर हुकूमत है।

प्रसिद्ध हैं। बहुधा देखनेमें आता है कि,हमारे हिंदुस्थानी भाई अन्यदेशवासियोंकी अपेक्षा इसे अधिक प्रिय और आरामका स्थान समझते हैं। कई एक जातिके लोग तो ऐसे हैं यथा-कोल, भरिया आदि कि, यदि एक दिनको भी अन्न घरमें रक्खाहो तो उद्योगके लिये घरसे बाहर नहीं निकलते हैं। खूब दिन रात ढोलक नगाडियां (टिमकी) बजाते और ददरिया गाते और आपको राजा समझते हैं। जब घरमें नाजका दाना नहीं रहता तब मजदूरी या घास लकड़ी आदि लानेको निकलते हैं॥ आलसी लोगोंको दौड़नेसे धीरे चलना और धीरे चलनेसे खड़ा रहना तथा खड़े रहनेसे बैठ जाना और बैठ जानेसे टिकजाना और टिकजानेसे लेट रहना और लेट रहनेसे सो जाना और [illegible] लगता है। [illegible]

महा आलसी तो ऐसे हैं कि, मरजानेको म-
हाविश्राम समझते हैं । अपनी युक्तिसे उद्योग
करना तो क्या ? कहनेपर भी हाथ पैर नहीं
हिलाते चलाते । चाहते हैं कि, छः महीनेकी
रात होती तो बहुत अच्छा होता, खूब सोते
बहुतेरे लोग ऐसे आलसी होतेहैं कि, जिनका
कोईभी काम समयपर ठीक नहीं होता। जब
देखो तब सदा धसड़ पसड़ अपूराही रहता है।
बहुतेरे प्रारब्धहीके भरोसे रह गलियोंमें भीख
मांगते और घर कुटुम्बवालोंको थुकाते हैं।
और कहतेहैं कि, ईश्वरने तो हमारे कर्ममें यहै
लिख दिया है, अधिक कहां पावें कोई कहे कि
भूंखे नंगे क्यों फिरते हो ? कुछ मिहनत करो
तो कहते हैं कि, हम तो भगवान्की चाकरी
करते हैं परंतु परमेश्वरका नाम कभी स्वप्नमें
भी नहीं लेते । तीन दिनके उपासे, तीन दिन-

अंधेके आगे रोना अपने दीदे खोना

क उपासे यों कहकर गलियोंमें चिल्लाया कर-
ा हैं। ऐसे आलसियोंनें जैसाही मनुष्यजन्म
पाया तैसाही न पाया। ऐसे मनुष्योंकी अपेक्षा
तो चींटा चींटी, मधुमक्खी और गिलहरी
आदि छोटे २ जीवधारी अच्छे होतेहैं। जो
सालभरको खानेके लिये ढूँढ खोजकर धर-
लेते हैं। और फिर आनन्दसे खाते और चैन
करते हैं। जिस मनुष्यने ऐसा विचारा कि,
यह काम आज कौन करें? कल कर लेंगे तो
समझलो कि, इसके शिरपर आलस्य [illegible]
होगया और यह काम अब इससे [illegible]
पूरा न होगा। ऐ विद्यार्थियो! तुम [illegible]
दयमें आलस्यको वास कदापि न [illegible]। [illegible]
रन आलसी लड़कोंके साथ [illegible]
और आज [illegible] कलको [illegible]
उसी दिन पूरा करलो॥

चक्षु प्रकाशकतेज रवि, उल्लू तिमिर मदान १
क्रम क्रमफोडे नीरगिरि, क्रम२छल अरिनाश
क्रम२ विद्या धन वढे, पूरे मनकी आश॥२॥
विद्या सम संसारमें, कोई करे न काम ॥
याते सब तज सीखिये, विद्या नाथूराम॥३॥

१९–पाठ.

हिन्दुस्थानके प्रसिद्ध पहाड।

प्रसिद्ध=मशहूर	तीर्थस्थान=धर्मक्षेत्र
शाखा=छोटी २ श्रेणी	देवालय=देवमंदिर
शिखा=चोटी	करीव=अटकल, लगभग
संवंध=मेल	वहुधा=अक्सर

मुख्यकर हिंदुस्थानमें प्रसिद्ध पहाड हिमालय, विंध्याचल, सत्पुडा, अर्वली, पूर्वीघाट, पश्चिमीघाट (सह्याद्रि) नीलगिरि सुलेमान, हाला ये हैं. परंतु इनकी शिखा अनेक नाममें पुकारी जाती हैं। यथा हिमालयकी शिखा प्रसिद्ध और ऊंची ये हैं–एवरिष्ट जो २९००२ फीट ऊंची नेपालके पूर्वमें

सबमे ऊंचीहै। चमलारी २४००० फीट ऊं-
भूटानके उत्तरमेंहै। डोंकिया शिकमके ...
भागमें है। धवलगिरि २६८६० फीट ऊँची
धनाग्मके उत्तरनेपालमेंहै। नन्दादेवी २६०००
फीट कमायूंके उत्तरमें है। किनचिनचिंगा
२८१५६ फीट ऊंची शिकमके वायव्य दार्जि-
लिंगके उत्तर, यमुनोत्री २५५०० फीटऊंची,
नंदापर्वत २६६०० फीट ऊंचा काश्मीरमें
इनके सिवाय और भी कई चोटियां है। हि-
मालयके हिमसम्बंधी और भी अनेकपर्यायी
नाम हैं। यथा-हिमवान, हिमाद्रि, हिमगिरि-
हिमाचल आदि, हिमालय पर [illegible]
सर्वपदार्थोंसे बड़ा और ऊंचा है [illegible]
द्रीनाथ, केदारनाथ, मुक्ति [illegible]
आदि अनेक तीर्थस्थान हैं [illegible]
[illegible]
गया है इनका ऊंचाई [illegible]

हजार फीटसे ऊंचा नहीं। शिला इसकी अ-
मरकंटक ३५०० फीट ऊंची पारसनाथकी
४७५० फीट ऊंची पहिली नर्मदा शोणका
निकास स्थान होनेसे वैष्णवलोगोंका तीर्थ
स्थान है। और दूसरा जैनीलोगोंका तीर्थ-
स्थान है। सत्पुडा मध्यप्रदेशके मध्यभागमें
फैला है। इसकी ऊंची चोटी धूपगढ ४४५४
फीट ऊंची, और पचमढी ४२०० फीट ऊं-
चीहै। अर्वली पर्वत राजपूतानेमें है। जिसकी
ऊंची चोटी आबूनामकी सिरोही राज्यमें है।
जिसपर जैनियोके मंदिर १८करोड़की लाग-
तके बने हैं। गिरिनारका पहाड़ काठियावा-
डमें मैलभर ऊंचा जैन और वैष्णवोंका तीर्थ-
स्थान है। सुलेमान जो अफगानिस्तान हिंदु-
स्तानके मध्यमें है। इसकी ऊंची चोटी तख्त
सुलेमान १२००० फीट ऊंचीहै। [illegible]
जा मसूरके पास है इसकी ऊंची चाटी [illegible]

मंर जिसमें कावेरी निकली है।
द्राव हालेमें ईशानसे नैर्ऋत्य दिशाको गया है। पश्चिमी घाट अरब समुद्रके किनारे है। इसकी ऊंची चोटी महाबलेश्वर कृष्णा निकली है ४४००फीट है। ... ८७६०फीट ऊंची है।पश्चिमीघाटके दक्षिण भागको मलयगिरि कहतेहैं। प्रसिद्ध पहाड़ तो यही है इनके सिवाय छुटकर और भी कई पहाड़िया है जो वर्णन करनेके योग्य नहीं है।

२०—पाठ.

रेलयमें हानि लाभ

[illegible]

[illegible]

पहुंचते थे। वहां अब आरामसे दो दिनमें पहुंच जाते हैं। भाड़ाभी अन्य सवारीसे कम लगताहै और किरायेका भाव नहींठह-राने पडता। नियत किरायेसे कोई एक पैसा अधिक नहीं ले सकता है बरन् कभी २ जब भारी मेले होते हैं तब किराया आधा हो जाता है यह नहीं कि,अटकाव और जरू-रित जानकर अन्य सवारीवालोंके समान द्विगुण त्रिगुण किराया धमकें। शीत उष्ण और वर्षाकी बाधाका कुछ भय नहीं होता यदि मुसाफिर होशियार रहें तो चोर और डाकूका कुछ भय नहीं:जैसा कि,अन्यसवा-रियोंमें होताहै औरजंगलीजानवरादि दुष्टजं-तुओंका भय तो स्वप्नमें नहीं होताहै। मालभी अनेक दूरके स्थानोंका विनाश्रम कमकिरा-या देनेपर आजाताहै और अन्य भाडेकी सवारियोंकी अपेक्षा बिगडना घटना भी कम होताहै। ऐसे भारी २ चीजें भी जो किसी सवारी

पर नहींआसकतीहैं,सोभी
तीहै।अकाल पडनेपर भी पैसा पास होने
आदमी भूखोंनहीं मरसकते सब चीजें अल
कालमें अनेक देशोंसे आजातीहै। इसीत
कोई भी चीज कितनीही अधिकाईसे क्यों
हो, वहाँही पडी २ सडा नहीं करती।
न किसी देशको चलीही जाती है। जो
दशकोशको मुसाफिरीके नामसे डरते
घरसे पेर नहीं उठातेथे वे अब सैंकडों
तीर्थ करते और अनेक देश नगर देखतेहैं। भ
घमें भी बडा अंतर नहीं रहना। जैसे कि,पहि
ले एक जगह रुपयेकी वस्तु चारमन मिल
थी वही सौकोशके अंतरपर रुपयेकी एकम
मिलती थी अब बडा अंतरहो तो सवाया ड
ढयोढ़ा इसमें अब बिनाखेद सर्व हि
लोगोंको सर्व जगहकी सर्व
नेपीने और पहिरने आदिकी मिलत

यापार भी जहाँ सैकडोंका होता था वहाँ
अब लाखोंका होता है। नौकरी पेशेवाले वा
मजदूर लोग लाखों रेलवेके महकमेंसे नित्य
पलते हैं। समस्त हिंदुस्तानकी रेलवेमें
छोटे और बडे दर्जे के नौकर व मजदूर
लाखोंही होंगे सबके कुटुम्बका पालन आ-
नन्दसे होता है। रेलवेसे बहुत लाभहै। यदि
समस्त विगतवार लिखा जाय तो एकबडा
भारी पुराण बन जावे। और हानि जो कुछ
है तो एक बडी हानि यहहै कि,लाखों विघे
उपजकी जमीन रेलवेमें आगई। उसकी
उपज मारी गई। जिससे उपजमें हानि हुई
दूसरे बहुधा रेलवेमें कई जानवरों व मनुष्यों-
का असावधानीसे कटजानेसे अकाल मृत्यु
होजाती है। तीसरे बंजारे आदि लादनेवालों-
का रोजगार मारागया। चौथे चोर बदमाशी
करके और दिवालिये दिवाला मारकर
माल ले शीघ्र भागजाते हैं। पांचवें अंजन-

कर और डिव्बी पर उम्दह रंग चढा कर भेजा। उन दिनों वह डिव्बी एक आनेमें विकती थी। फिर धीरे २ दो तीन किस्मकी चौखूटी बडी डिव्बी मोटी सलाईकी आईं और तीन पैसे दो पैसे तककी बिकीं। अब वर्त्तमान समयमें जो डिव्बी आती हैं वे तो छोटी मगर सलाई पतली होनेसे करीब ८० के रहती हैं। और एक पैसेकी दो आती हैं। ये कच्चे देवदारुकी लकडीकी रहती हैं। पहिले सलाईपर कुछ दूर लों गन्धक फिर सिरेपर काला या लाल रंग देकर फास्फरस लगाते हैं। फिर यह सलाई किसी कडी चीजपर जरा भी रगडो तो तुरंतही जल उठती है। मुसाफिरीमें इससे बडा आराम मिलताहै। जहां चाहो तहां ही तुरंत सुगमतासे प्रकाश या आग करलो। अब चकमक पथरीका कुछ काम नहीं रहा। चोरोंको भी बडा सुभीता होगया है।

जहां चाहैं तहां तुरंतही उजाला करके देख लेतेहैं ॥ कुछ दिनोंसे सुननेमें आया है कि कलकत्तेमें एक हिन्दुस्थानी कम्पनीने दिया-सलाई का कारखाना खोला है। यदि फायदह होगा तो यह कारखाना और भी बढाया जायगा बरन् और भी नये २ कारखाने खुलेंगे। यह दियासलाई गरीब अमीर सबके यहां खर्च होती हैं। समस्त हिन्दुस्थानमें सालाना करोड रुपयेसे अधिकहीकी खर्च होती होगी ॥

२२-पाठ.

समझमें फेर पाप करें पुण्य समझे ।

माहात्म्य=बडाई　　मांसभक्षी=मांसखानेवाले
कुगुरु=कुशिक्षक　　मद्यपानी=शराब पीनेवाले
दुराचार=कुचलन　　प्रगाढ़=पक्का
पोषण=पालनकर्ता　　करुणा=दया,

यह सर्वमाहात्म्य कुगुरोंकी चतुराईसे है कि, पाप कराकर दूसरोंको नरकमें डालते

और आप अपना काम निकालते हैं। और फलाष्टक पुण्यका सुनाते हैं। जैसे जो लोग मांसभक्षी, मद्यपानी हुऐ हैं उन्होंने ऐसे दुराचार पोषक ग्रन्थ रचे हैं कि, देवीदेवताओंको बकरों भैंसा,मुर्गादि जीव और मद्य चढाना बडापुण्यहै। फिरवह मद्यमांस देवीके प्रसादके नामसे आप खाते पीते हैं। मूर्ख चढानेवाले यह नहीं विचारते हैं कि,भला हलाहल जहर (जिसके खातेमात्रही प्राण जातेहैं) खानेसे चिरायु कैसे करेगा?तैसेही घोर हिंसा तो पापकी जड है। भव२में वैर बंधका कारण है। इसके करनेसे पुण्य कैसे होगा ? जबहोगा तब नरकका दाता पापही होगा।जिसजीवका घात किया जाता है उसको अपार दुःखहोताहै ।यदि उसे दुःख न होतातो काटते समय चिल्लाना तडफडाता क्योंहै? परंतु काटनेवाले निर्दयचित्तवालोंको उन विचारे दीनों-

के मरनेमें करुणा तो आती नहीं, फिर [illegible]
जाने कि,उन्हें दुःख होताहै । और जब [illegible]
दुःख होताहै तब पापभी होताहै क्योंकि दू
रोंको दुःख देना सोही पापहै।यदि ऐसे कर्म
में पाप न होता तो जो लोग अच्छे आचर
और कोमल स्वभाववाले हैं ऐसे कामोंक
क्यों नहीं करते ! करें कैसे ? उनका स्वभा
तो करुणामय दयालु है । ऐसे कार्य तो उन
दुराचारियोंसे बनेंगे जो कठोरहृदय निर्द
चित्त और स्वादके लालची हैं । सत्पुरु
तो वही हैं जो सब जीवोंको अपने समा
जानते हैं किसीको दुःख देनेकी इच्छा भ
नहीं करते । भला देवी देवता जो एक मा
खाना पीना चाहेंगे तो व हर किसी छुड
मेंसे मन माना मोटा ताजा [illegible]
गे । तुमसे क्यों मांगे । [illegible]
[illegible] दो । यदि [illegible]
सामर्थ्य [illegible]

र सकेंगे जो इनके डरसे पाप करते हो
ाचित् यह कहो कि, देवी देवता पापके
से हिंसा आप नहीं करते तो हिंसा करनेमें
हें पाप क्यों न होगा? जो देवी देवता आ-
ोही पापसे नहीं बचा सकते हैं तो तु-
कैसे बचासकेंगे? और कैसे स्वर्गसुख
वेंगे? जिसकी आशापर तुम घोर पाप
रते हो और देवी देवता, शेर, चीता, हाथी,
डा आदि प्रबल जीवोंको क्यों नहीं मांगते
ो विचारे बकरे मुर्गोंके प्राण लेते हैं।
ांगे कौन? जो मांगनेवाले पाखंडी ग्रनिया
याने भक्त आदि बनते हैं वे तो जानते हैं
कि, यदि ऐसे बलवान् जानवर कहे जावेंगे
ो कोई न लावेगा। इससे निर्बलोंकोही
बतातेहैं। ऐ विद्यार्थियो! तुम ऐसे दुराचा-
रोंसे सदा बचे रहो और ऐसे दुराचारियोंके
पास कभी न बैठो। नहीं तो ऐसे दोष
तुमको भी घेर लेवेंगे॥

मियांकी दौड मस्जिदलों है

२३–पाठ,

केरोसिपन आइल (मटिया तेल)

उत्पत्ति=पैदाइश	बदबू=दुर्गन्धि
विशेषकर=बहुधा	फ़ानस्वर=कन्तप
सल=जो, क्योंकि	दृष्टि=नजर
मात=हवा	जिकर=दाव

यह मटिया तेल इसलिये कहलाताहै | इसकी उत्पत्ति किसी लकडी या बीजसे न है । विशेषकर ऐसी जमीनसे निकलता है | जहां यातो पत्थरका कोयलाहोयागंधक अ दि कोई जलनेवाला अन्यपदार्थहोवें।यहा पानी इतनाहलका और गरमनामीहोजा है कि,जैसे शराबका फूलजलनीवत्ती दिख नेसे भभक जाताहै। इससेभी शीघ्र यह जल ने लगताहै । परंतु इतना और भी ध्यान र कि, जलाहुआ कोयला या कंडा जिसमें लौ न निकलती हो इस तेलमें डालनेसे बुझ

ावेगा। और तेलमें आग न लगेगी। परंतु
झलक लगतेही तेल सबकासबएकसाथ जल
उठेगा।इसीसे इसको ऐसे वर्तनमें जलाना चा
हिये कि तेल बंद रहे और वत्तीका एकशिरा
तेलमें डूबारहै और मध्यमें वत्ती दवीरहै और
दूसरा शिराजलाया जावेतो अग्निकाभय नहीं
रहता है। इसे खुले वर्तनमें कभी न जलाना
चाहिये।यह इतना गरमतासीर है कि, किसी
वात पीडामें नसपर मलो तो थोडेही दिनोंमें
दर्द हट जावेगा। इसमें वदबू आती है और
मटियाकहलानेसेबहुतेरे ना समुझ ऐसाकहते
थे औरकुछ२ अब भी कहतेहैं कि,यह मैलसे
निकसताहै। इसलिये अशुद्धहै सो यह वदबू
तो अवश्य करताहै,मगर न अशुद्धहै नामैले-
से पैदा है। किसीभी चीजका मिहनत करके
बनाया जाताती इतना सस्ताकभी न मिलता
इसका जो कुछ मोल है वह वहांसे यहांतक

आनेमें किराये आदि खर्चेकाहै।नहींतोख
नपर, जहांसे तेल निकलताहै,आठआने क
स्तर ले लीजिये । यह अमेरिकाके यूनाइटे
स्टेटसे और रूससे बहुत आताहै और इंग्लै
आदि प्रदेशोंमें भी निकलताहै परंतु कम
आता नहींहै । ब्रह्मदेशमें यह तेल बहुत दि
हुए निकला है । परंतु कीचडसा, साफ न
इसका जिक्र राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द
अपने भूगोल हस्तामलकमें लिखाहै जोस
१८५४ ई० में छपा है । करीब ४२ वर्ष हु
वहांके लोग इसका उपयोग नहीं जानते
कोई ऐसे यन्त्र रखते हैं कि,जिनकेद्वारासाप
तेल निकालसकें सन् १८७६(में यह तेल१
पेटी बिकाथाअब१८)में चारपेटी तेलआत
है । यह तेल चिकटा नहीं है । इसीमें इसका
भीगा कपडा धोने और धूपमसुखाने साफ
होजाता है और बत्ती लगा...

बडे मिलें तो बडे मिल छोटे मिलें [illegible]

तल उठता है तैसेही हवाके लगतेही बुझभी जाता है। कारण कि, पतला बहुत होता है इससे इसमें दम नहीं है। यदि इसमें बदबू न आती और दृष्टिको हानिकारक न होता और काजल अधिक न देताती बेशक बेशकी मत गिना जाता। इसको चूहे नहीं पीते, न चीटियां इसे छूतीहैं, न शर्दी गर्मीसे बिगडता है परन्तु गफलतसे जलानेवालोंका सर्वस्व नाश करताहै इसके द्वारा बहुत मनुष्य और माल मकान जल गयेहैं। हिन्दुस्तानमें इसे गरीब अमीर सब जलाते हैं। विदेशसे करोडों रुपयेका तेल सालाना आता है॥

२४—पाठ.

पत्थरका कोयला।

धन=भारी हथौड़ा मत्त=घूमन होम

सुबूत=प्रमाण शायद=कदाचित्

यह कोयला पत्थरके समान भारीऔरक
डा होताहै औरजमीनके भीतरकीतहकीत
चटानके माफिक निकलता है। धनोंसे
फोड़२ निकालाजाताहै । कहीं २ पत्थरकी
चटानोंके भीतर कोयलेकी तहरहतीहै। त
पत्थरको बारूदसे उड़ाकर कोयलेको निका
लते हैं। कोई२लोग ऐसा कहतेहैंकि,अगले
समयमें जंगलके जंगल दबकर रहगयेहैं औ
सुबूत यहदेतेहैंकि,कोयला फोड़नेमें कहीं २
पत्तोंके निशान मिलतेहैं।यह कोयला एशि
या,यूरोप,अमेरिकामें कोसों लम्बी चौड़ी
भूमिमें निकलताहै।जहां२०या३० पर्व काम
लग होगये और हजारों लाखों मन कोयला
रोज २ निकलता है. तब भी निकलना यह
नहीं हुआ शायदमें जगलोंके दबजाना

श्चर्यकारी बात तोहै परंतु बिलकुल असं-
नहीं है।शायद ऐसाही हो मगर बहुत
के ऐसा जान पडताहै कि,यह मटिया तेल
हां अधिकतासे है तहां तो वहता है और
हांकी माटी कडी या नर्म पत्थरमें तेलके
से अंश मिले हैं कि,अलग नहीं होते सो वे
त्थर इस तेलके मिलनेसे जलने योग्य
ोगयेहैं। क्योंकि पत्थरका कोयला जला-
कर तापते हमने स्टेशनोंपर बहुत देखा है
ो उसकी बदबू मटीया तेलके जलनेकीसी
आतीहै। और तापतेमें तेलभी पसीज २ के
निकलकर जलते देखाहै और संभव है कि,
जिस माटी या पत्थरमें मटियातेल भिदजावे
वहअवश्यही जलेगा।इससे यह विचार हालमें
दृढ़ है. जबतक कि. कोई इससे अधिक दृढ़
प्रमाण नहीं मिलता है । पत्थरके कोयलेमे
बहुत उपकार हुआ है । नहीं तो अभीतक
सब जंगल और बाग बगीचे रेलके एञ्जनमें

[illegible]

२५-पाठ.

बालोपदेश-(पद्यमें.)

मद=घमंड	मद्य=शराब
शिक्षा=सिखावन	कष्ट=दुःख
कृतघ्न=जो उपकार भूले	विविध=नानाप्रकार
पोषण=पालन	विपुल=बहुत
रक्षण=रखवारी	मृदु=कोमल

दोहा ।

मात पिता गुरु सम नहीं; या जगमें हितकार ॥ पोषण रक्षण कर करे, शिक्षा सुखदातार ॥१॥ जो कृतघ्न बालक इन्हें, भूले हो मदलीन ॥ सो पावतहैं दुःख अति, बने भिखारी दीन॥२॥ ऊपर कटु बोले वचन, तो भी हृदय दयालु ॥ मात पिता गुरुसम नहीं, जगमें और कृपालु॥ ३ ॥ आप विविध कष्ट सहि, करत तुम्हारा पोष ॥ नि- [illegible] अनहित करै, नाहक [illegible] दोष४॥ [illegible] कुसंगति त्याग जो, मानें [illegible] बाल॥

रुपये लेते हैं और तिनसे रंचमात्र फायदा नहीं होता। हम यहां कच्चा लेख नहीं लिखते कई शर्मा वेशर्मा और वर्मा वेधर्माओंको खूबी आजमाचुके हैं। न जाने किस विश्वकर्माने इन अधर्मी कपट मूर्तियोंको रचा है। इसी तरह वर्तमान समयमें बहुतसे पंजाबी ठग अंग्रेजके किसी साधुके चेलोंके नामसे हिंदुस्थानके प्रत्येक शहरोंमें नालाना नये २ फिरते हैं और खूब ठगते हैं इन लोगोंने ठगनेकेलिये तीन द्वार रक्खे हैं एक तो दवा नहिं दामपर नकद देना। दूसरा उधार देना। तीसरा सैन देना। सो दवाई कमही या छवानकी पिसीहुई बकबकली या अन्य पिसे पदार्थ, जिन्हें लोग पहिचान न सके [illegible]

बस जो दवा नकद देतेहैं,उसकातो एक पै
का रुपया बनही गया । और जिसे उधार
हैं उससे रुक्का लिखाते हैं कि, हम अ
होनेपर एक रुपयेकी दवाका सवा देवेंगे,अ
अलावे इसके दश बीश या पचीसरुपयेइन
मके देवेंगे। और एक आनेका टिकट लग
दिया या एक आना टिकटको नकद दे
या । उन उल्लूनाथने तो जाना कि ये महा
शय बड़े सच्चेहैं जो उधार दिये जाते हैं
और उन ठगोंने पहिलेही सोच रक्खाहै कि
उल्लूके पट्ठेपे दमड़ीका एक आनातो मिला
और जो सैन देते हैं उसमें अत्यन्तः दमड़ी
छदामका नुकसान सहते हैं परन्तु जमा चुना
न डालाजावे तो और मूर्ख चिड़िया जाल-
में कैसे फंसे ! और खूबी यह है कि, जो
लोग एकबाल जिस प्रदेशका ... है
वे दो चार मास उस ...
...

। आजतक कहीं भी किसीसे उधारके दाम
वूल करने नहीं आया। तिसपरभी मूर्खचेत
हीं करते हैं। सालाना हजारों मूर्ख ठगाया
। करते हैं। इन ठगोंमेंसे एक भी उससाधु-
ा चेला नहीं। न कोई नौकर है। योंही
कह देते हैं कि, हम अम्बालेके साधुबाबाके
चेलेहैं वृथाही साधूको बदनामकरतेहैं। यदि
साधुही ऐसा कराते होवें तो इन महाशयको
महावंचक कहना चाहिये। परंतु हमको यह
विश्वास नहीं कि,बाबाजी ऐसे दुराचारकरें
यह इन्हीं ठगोंकी चालाकी है। ऊपरलिखे
वैद्यशर्माऔरवैद्यधर्माओंकेविज्ञापनोंकाहाल
भी समझिये। ये लोग जो छापतेहैं कि,हमारे
पास अमुक२ लोगोंके सार्टीफिकट हैं। अ-
थवा उनकी नकलभीविज्ञापनोंमें छापतेहैं।
तो व सार्टीफिकटभी असलमें मिट्टमा रकों-
के हैं। बहुतेरे लोग तो ऐसा करतेहैं कि, कई

२७-पाठ.

हिंदुस्थानके प्रसिद्ध रजवाडे।

वास्ता=सम्बन्ध
रक्षा=हिफाजत
उत्तराखण्ड=हिंदुस्थानके उत्तरके देश
स्वतन्त्र=स्वाधीन

हिंदुस्थानमें मुख्य राज्य तो अब अँगरेजोंका है। परंतु फिर भी बहुतसे हिन्दू मुसलमान भी हिन्दुस्थानमें राजा महाराजा अँगरेजोंसे रक्षित राज्य करते हैं यथा-उत्तर भागमें नैपाल, भूटान दो राजा तो स्वतंत्र हैं। जिन्हें अँगरेजोंसे कुछ वास्ता नहीं है नेपालकी राजधानी काठमांडू। भूटानकी तासीसूदन है। और रक्षित राज्य उत्तराखंडमें शिकम जिसकी राजधानी तुमलांग है। दूसरा काश्मीर राजधानी श्रीनगर है। तीसरा जींद चौथा नाभा. पांचवां कलसिया. छठवां कपूरथला. सातवां भावलपुर. आठवां

नवर्वा पटियाला, इनकी राजधानीके नाम हैं, जो नाम राज्यके हैं इनमेंसे शिकम तो लेफ्टनेंट गवर्नर वंगालकी रक्षामें है। बाकी९लेफ्टनेंट गवर्नर पंजाबकी रक्षामेंहैं और पूर्वमें कूचविहार, मणीपुर, टिपरा की राजधानियोंकेभी येही नामहैं। ये लेफ्टनेंट गवर्नर वंगालकी रक्षामें हैं। और छोटे नागपुरमें भोकर, कोरिया, सरगूजा आदि कई छोटे २ रजवाडेहैं और रनपुर, नयागढ, खंडयारा आदि छोटे२ उन्नीस रजवाडे हैं। ये भी सब लेफ्टनेंट वंगालकी रक्षामें हैं। मध्य हिन्दके रजवाडे (१) रीवाँ, उँचहरा, मेहर, नागोद, पन्ना, टिहरी, दतिया, छतरपुर, अजयगढ, चरखारी, बिजावर, उरछा इन सबकी राजधानी भी इन्हीं नामोंकीहै। सेंधियाकी राजधानी ग्वालियर होल्कारकी राजधानी इंदौर है। भूपाल, धार, देवास, बडवानी इन चारोंकी राजधानियोंके नाम

हीहै जो राज्यकेहैं. ये सब रजवाडे रेजीडेंट जण्टकी रक्षामें हैं। राजपूतानेके रजवाडे। बिकानेर, जैसलमेर, किशनगढ, करौली, अल्वर, टोंक, धौलपुर, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, भरथपुर, कोटा, झालावार, बूँदी, डोंगरपुर, प्रतापगढ, सिरोही; इन सबकी राजधानियोंके नाम भी येही हैं। ये सब गवर्नर जनरलके अधीनहैं। गायकवाडकी राजधानी बडोदा। काठियावाड इसमें ओकमंडल, नवानगर, जूनागढ, भावनगर आदि छोटे रजवाडे हैं पालनपुर, महीकाठा, रेवाकाठा इन रजवाडोंकी राजधानी यही। कोणमें सावंतवाडी, कोल्हापुर, सिंधमें खैरपुर और कच्छकी राजधानी भुज है। ये सब रजवाडे गवर्नर बंबईकी रक्षामेंहै। हैदराबाद निजाम, त्रावनकोरकी राजधानी त्रिवंद्रम, मैसूरकी राजधानी श्रीरंगपट्टन, पुदुकोटा और कोचीं

६, एक दो निकौस दू के अने परी पु

ता है। वैसे तो सिंधु और ब्रह्मपुत्र दोनों
गासे दो दो सौ मील बड़ी हैं परन्तु इनका
आधा लंबाव तो हिमालयके उसीपार खतम
होजाता है हिन्दुस्थानमें बहाव आधाही है
इससे गंगाही सबसे बड़ी गिनी जातीहै,दूसरे
गंगाके जलमे नहरोंके द्वारा असंख्य एकड़
जमीन सींचीजाती है जिससे खेती अच्छी
होती है और पत्थरीली न होनेसे बड़ी २
नावें जिनमें सैकड़ो मन बरन् हजारों मन
माल लादा जाता है, इसकी धारमें कल-
कत्ते तक आती जातीहै। इससे लोगोंको
बहुत कुछ लाभ होता है। यह हिमालयकी
दक्षिन श्रेणी मे १४००० फीटकी ऊँचाई-
परसे निकली है। वहां नौगज चौड़ी और गज
भर गहरीहै। फिर हिमालयसे निकलनेवाली
नदियां इसमें आ मिली है दाहिने किनारेमे
... और बायें किनारेमे रामगंगा,
... घाघरा, शरयू, गंडक.

नकी राजधानी बंगरहै ये सब मद्रासके नंरकी रक्षामें हैं और रुहेलखंडमें रामपुरसो पश्चिमोत्तर देशके लेफटनेंट गवर्नरके अधीन है तथा कमाऊँराजधानी टिहरीहै। हिंदुस्थानमें मुख्यरजवाडे तो यहीहैं। बाकी छोटे २ रजवाडे और भी हैं सो बगाय नाम राजा है असलमें तालुकेदार मालगुजार हैं। सिवाय पोर्तुगीज और फरासीसोंकी थोडे २ इलाके हैं यथा फरासीसोंके चन्द्रनगर पुरस्टीमें यानान(गोदावरी) पटुच्चेरी कारीकाल ये हैं पोर्तुगीजोंके पंगुम (गोवा) दमन दायू वा दयू हैं॥

२८—पाठ.

हिंदुस्थानकी प्रसिद्ध मंदिर।

[illegible]

है । वैसे तो सिंधु और ब्रह्मपुत्र दोनों
से दो दो सौ मील बडी हैं परन्तु उनका
या लंबाव तो हिमालयके उसीपार खतम
या है हिन्दुस्थानमें बहाव आधाही है
से गंगाही सबसे बड़ी गिनी जातीहै, दूसरे
ाके जलसे नहरोंके द्वारा असंख्य एकड़
ीन सींचीजाती है जिससे खेती अच्छी
ती है और पत्थरीली न होनेसे बडी २
वें जिनमें सेकडों मन वरन् हजारों मन
ल लादा जाता है, इसकी धारमें कल-
त्ते तक आती जातीहै । इससे लोगोंको
हुत कुछ लाभ होता है । यह हिमालयकी
क्षिण श्रेणी से १४००० फीटकी उँचाई-
रसे निकली हैं । वहां नौगज चौडी और गज
भर गहरीहै । फिर हिमालयसे निकलनेवाली
नदियां इसमें आ मिली है दाहिने किनारेसे
यमुना सोन और बांये किनारेसे रामगंगा,
गोमती कर्मनाशा घाघरा (शरयू) गंडक,

एक ग का नाम दूने छभाठ छिये हुए

बागमती,तिष्टा,कोशी ये और अनेक छोटी
नदियां भी मिली हैं। राजमहलसे
इसकी सेकडों धारें हो गई हैं। जो धारें सुन्द
बनमें होकर बँगालेके उपसागरमें मिली हैं
बडीधार एकभागीरथी हुगलीके नामसे कल
कत्तेके पासहो सागर टापूके पास गंगासागर
के नामसे समुद्रमें मिलीहैं,दूसरी सबसे ब
ब्रह्मपुत्रसे मिलकर सहबाजपुर टापूके
समुद्रमें मिली है, ब्रह्मपुत्र और सिंध
रावण ह्रद (दह) से निकलकर पहिले
पुत्र पूर्वको और सिंधपश्चिमको ठीकर...
फिर दोनों दक्षिणको मुडकर सिंध अरबस
मुद्रमेंऔरब्रह्मपुत्र गंगाकेसाथ बंगालेकेउप
द्रमें मिलेहैं। सिंधकी सहायक नदियां दाहि
किनारेसे काबुल और बाँये किनारेकी सत
लज,व्यासा,रावी,चनाब,झेलमहैं॥ विंध्या
चलके उत्तरसे निकलके चंबल,कन,बेतवा
यमुनामें मिली हैं। साबरमती,माही,लुनी ये

सभाके होनेसे हित तो बहुत है। यदि सम्यक् प्रकार यथोचित नियमसे होवे यथा पहिले सभाकेसभासद विद्वान्,दीर्घवि निरालसी,सद्वक्ता,परोपकारी, ल, सहनशील, उदार नीतिवान् हो। ती,हठग्राही,ईर्षावान्, जउआ,कुतर्की, र्थप्रलापी,निकम्मे,मूर्ख, अपढ, न होवें और सभामें ऐसी २ बातोंका कियाजावे कि,जिनसे लोगोंका आचार, चार,आहार,व्यवहार,व्यापार,चाल, धर्म,कर्म दिनोंदिन सुधरें और वृद्धि किसीके धर्म, कर्म,आचार,व्यवहारकी न्दा,द्वेषभावसे न की जावे। जिससे जिस तिकुलमें वा जिस देशमें जिस मतमें जोर२ प्रशंसनीय होवें, वे सबको मान्य करने आदेश की जावें और जोर२रीतें निंदनीयहै उनका निषेधकियाजावे।सबमंसारको अप

ा, घर, कुटुम्ब समझाना चाहिये। सबके
ायमें भलाई करनेको आदेश किया जावे।
ाहितराजहितदोनोंकेसाधनकोयुक्तियांनि-
ार्लीजावेंआरोग्यतापरभीविशेषध्यानदिया
ानिलडाईझगडेमिटानेको प्रयत्नकियाजावे
ाव कार्योंका पक्षपात द्वेष भावरहित विचार
किया जावे। और सभासदोंसे जो कुछ राय
ननेको पूछा जावे वह मुखाग्रनहीं। मुखाग्रका
ासन चित्तपर दृढतासे नहीं जमता इसलिये
रक काले तख्तेपर बड़े २ अक्षरोंमें लिखकर
सभासदोंके सन्मुख रक्खा जावे। जिसेकि,
सबुवी सब देखसकें और बार २ उसे पढकर
ठीक२ विचार करसकें। और प्रत्येक सभा-
सदके पास एक २ कोरी पुस्तक और शीश-
पेन्सिल रहै। जिसमेंअपने२विचारकोनिडर
हो लिखे। पीछेसब अपना२लेखपढसुनावें।
ऐना करनेसे कोई भी मनमानद किसी दबाव-

ही सारकाम, यासे मिले परमधाम, मिटे
ह मरनी ॥ मानो भगवंत बैन, यही
न करनी ॥ ५ ॥

३१—पाठ.

हितोपदेश पद्यमें खंड दूसरा ।

कुसंगति=कुसाथ	शिशु=बालक
कल्याणकारी=भलाकर्त्ता	अनारी=मूर्ख
नशा=अमल	श्रवण=कान
व्यथा=रोग,दुःख	अप्रतीति=अविश्वास

गज़ल ।

चनगुरुके श्रवणधारोसदाकल्याणकारीहैं॥
काकुसंगतिभूलनाकीजेकरेंशिशुसोअनारीहैं
शेसबदूरसेत्यागोव्यथाके धाम भारी हैं॥
चनगुरुके श्रवणधारो सदाकल्याणकारीहैं॥
वकका चोरठगअमली तथाबदमासज्वारीहैं
न्होंकेपास मतबैठोपुरुषबालक क्यानारीहैं
वचन गुरुकेश्रवणधारोसदाकल्याणकारीहैं२
मिथ्या तजोप्यारे कुवचपापाधिकारीहैं

झेके लाभ और नियम (कि, जिनसे
झा चल सके)हमारे देशवासी हजारों
ा मनुष्यभी नहीं जानते। साझेके काममें
स्पर सत्यता,प्रतीति,सहनशीलता,धैर्यता
ार निष्कपटताकी अत्यन्तहीआवश्यकता
।साझेका पूर्णलाभ विलायतवालेही जानते
।साझेके काममें कभी झगडा और नुकसान
ा हो इसलियेकुछ२मुख्य २ नियम स्थापित
कये जावें। प्रथम तो सौ पचास मनुष्य इस
प्रकार पूंजी एकत्र करें कि, दश २ रुपयेके
शेअर (हिस्से) रहें।ऐसा करनेसे थोडीपूँजी-
वालेभी शामिल हो सकतेहैं। कोई२दश२
रुपयेके दोचार भाग देवें, कोई २ दश वीश
भाग कोई२ सौ पचास भाग देवें,और कोई२
इससेभी (मनमाने) अधिक देवें, और
उन्हीं हिस्सोंके मुआफिक नफेमेंसे विभाग
पावें और यहभी चेत रहे कि,जो उस साझेके

ो माल छोटे दिशावरोंसे मँगानेमें रुपयेमें
ड़ता था वह बड़े दिशावरोंसे मँगानेमें पं-
ह आनेमेंही पड़ेगा। वरन् पूँजी अधिक
कत्र होनेसे बंबई कलकत्ता वालोंकी तरह
ास विलायतसे माल मँगा सकेंगे। जो
और भी सस्ता पडेगा। दूसरे बस्तीमें
उसी बड़ी कोठीकी शाखायें छोटी २ दूकानें
होनेसे माल नियत भावसे विक सकता है
कोई कम बढ न बेच सकेगा। इससे भाव
भी न विगडेगा। और न झूठ बोलने व कम
बढ़ तोलने नापने पड़ेगा। कारण कि, सब
दूकानें तो उसी बड़ी गोदामकी शाखा हैं
फिर भाव क्यों बिगाड़ना और इमानदारी-
से पैदावारीभी खूब होसकेगी और रकमका
बंदोबस्त इसतरहपर किया जावे कि, बड़ा
खजाना तो किसी बड़े जिम्मेदारके सुपुर्द
रहे और रोज २ का खजाना जिस नौकरके
सुपुर्द रहे उसके हाथ खजानेकी कुंजी न

॥ बैल न कूदे कूदे गौन यह तमाशा देखे कौन ॥

सवैया ।

पंडित काहूकी जाति नहीं जो मूढहूजाति
का गर्व धरें । पंडित काहूका नाम नहीं ज
मूढनको पंडित उचरें । ज्ञान कला जिन
प्रगटी हिय आतम तत्व विचार करें । पंडि
नाथूराम कहें तिनको जो स्वपर अघतापह
॥२॥ पंचै विषय पचेन्द्रियके तिनको दमि
मनशुद्ध करें।डिगेन त्रिया लखि चित्तका
अपकीरतिसेवसु याम डरें।तजिदेइँ कुपंथसु
पंथसजें परमातमका हिय ध्यानधरें । पण्डि
नाथूराम कहे तिनको जोभवोदधिपारतरें३

कुण्डलिया ।

धिकपंडित कलिकालके पापी भये नशेल
परतिय रत क्रोधी छली मान मत्त ज्योंबैल
मान मत्त ज्यों बैल मांस मधु भक्षण ...

कुंडलिया ।

अन्यायी सामर्थ्यका कौन प्रकाशे दोप
विन कारण डरते रहें सज्जन लखता रोप
सज्जन लखता रोप दोप कहु कैसे खोलें
धरे प्राण धन धाम प्रतिष्ठा जो बिन बोलें
नाथूराम जिन भक्त प्रगट खल जो दुखदा
को खोले ता दोप जान समरथ अन्याय
न्यायी समरथ सुजनके, देख दोप गुण लो
प्रगट निडर होकर करें लखता ग्नि मनो
लखता रीति मनोग भीति मनमें ना ला
देखें किंचित दोप विनयकर तो
नाथूराम जिन भक्त श्रवण सुन आपबुरा
करे न किंचित्रोप प्रगट जो समर

दोहा ।

यथा पालियामेंटका, किंचितदोप दिखाई
सुरतगजटमें छापकर

मगर अलाउद्दीनका, कहा न काहू दोष ॥
अथवा औरँगजेबका, जो अवगुणकाकोप॥

३५—पाठ.

ग्रहणविषयमें ।

किस्म=प्रकार	मानिंद=मुआफिक
धुरी=कल्पितरेखा	ग्रसलेना=निगललेना
ग्रास=ढेकना	कल्पित=बनावट
घूमना=चक्कर लगाना	

ग्रहण=चन्द्रमा या सूर्यका पृथ्वीकी छायासे ढकना.

ग्रहण दो किस्मके होते हैं एक सूर्यग्रहण जो अमावसको दिनमें पडता है दूसरा चन्द्रग्रहण जो पूर्णमासीको रातमें पडता है।पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों अपनीरधुरीपर घूमतेहुए जब ऐसे स्थानमें आते हैं कि,सूर्य और चन्द्रमाके बीचमें ठीक सीधमें जब पृथ्वी आजाती है तब पृथ्वीकी छाया चन्द्रमापर पडनेसे चन्द्रग्रहण होताहै पृथ्वी सर्वत्र गोल होनेसे—

मगर अलाउद्दीनका, कहा न काहू दोष ॥
अथवा औरंगज़ेबका, जो अवगुणकाकोष॥

३५—पाठ.

ग्रहणविषयमें।

किस्म=प्रकार	मानिद=मुआफ़िक
धुरी=कल्पितरेखा	मसलना=निगलडेना
आड़=रोकना	कल्पित=बनावट

घूमना=चक्कर लगाना

ग्रहण=चन्द्रमा या सूर्यका पृथ्वीकी छायासे ढकना.

ग्रहण दो किस्मके होते हैं एक सूर्यग्रहण जो अमावसको दिनमें पड़ता है दूसरा चन्द्रग्रहण जो पूर्णमासीको रातमें पड़ता है पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों अपनी धुरीपर घूमतेहुए जब ऐसे स्थानमें आते हैं कि सूर्य और चन्द्रमाके [illegible] पृथ्वी [illegible]

वालेकी ओटसे इधरवालेको उधरवाला और उधरवालेको इधरवाला न दीखेगा, यदि कम ओट होगी तो उतनाही भाग न दीखेगा शेष दीखेगा। ऐसाही ग्रहण भी जानो। कभी२ सूर्य और पृथ्वीके बीचमें बुध या शुक्र आता है तब सूर्यपर तिलके मानिंद कालादाग दूर्बीनसे दिखाई देता है। पृथ्वी सूर्यके आसपास पश्चिमसे पूर्वको घूमती है। उसीके सदृश उसकी छायाभी पश्चिमसे पूर्वको काली २ चलती है। तिसको ज्योतिषी लोग राहु मानते हैं और उसका पश्चिमसे पूर्व गमनभी मानते हैं। और राहुका रंगभी काला मानते हैं जैसा कि छायाका है। और गणितमें सूर्यको पृथ्वीके गिर्द घूमनेमें अथवा पृथ्वीको सूर्यके गिर्द घूमनेमें कुछभी अंतर नहीं पडता. हिसाब एकही आता है। जैसे किसी आदमीके आसपास वृत्ताकार रेखापर बराबर २ दूरीपर आठ आदमी कुछ

अन्तरसे खडे किये जावें। और वह सारी मनुष्य पंक्ति एक मिनटमें अपनी कक्षामें घूमजावे तो मध्यके मनुष्यको क्रमसे एक २ सेकंड पर एक २ आदमी सामने दीखता जायगा अगर वही मनुष्य अपने स्थान पर एक मिनटमें घूमे तब भी उसको प्रत्येक मनुष्य एक२सेकंड पर दृष्टिके सामने होता जावेगा। ऐसेही सूर्य वा पृथ्वी घूमनेमें गणित में अंतर नहीं पडताहै। परंतु और कई ऐसे प्रमाण हैं जिनसे सूर्यके आसपास पृथ्वीका घूमना सावित होता है॥

३६–पाठ.

भूत वर्त्तमान दशाका विज्ञान।

निश्चय=यकीन	ऋणी=कर्जी
महिर्ष=बडवन्	फिक्र=सोच, चिंता,
परिमितव्ययी=[illegible]	सामग्री=सामान
परिश्रमी=मिहनती	[illegible]=[illegible]

बहुधा विचार करनेसे निश्चय होता है कि,

[illegible] कर दिवाला [illegible] होता है

पहिले समयके लोग बहुधा भोरे, बलिष्ठ,
कच्चे, परिश्रमी, परिमितव्ययी, धीरस्वभाव
होते थे: कारण यह कि, तरुण अवस्थामें
पुनियोंके विवाह होनेसे और खाने पीने पहि-
ननेके सर्व पदार्थ सस्ते मिलनेसे और कम
फिकर होनेसे सदाही बलकी वृद्धि होती
रहतीथी. इसीसे अधिक परिश्रम करसकते-
थे और बहुत काल जीतेथे और जल्दी बूढे
नहीं होतेथे। कम खर्च (सादा खान पान
पहिराव) करनेसे ऋणी नहीं होतेथे। और
न अधर्मकर दिवाला खोलने पडताथा।
इसीसे फिक्र भी न था। और भोरे कच्चे
होनेसे उनका कोई काम भी नहीं अटकताथा
मगर दौलत और विद्याकी इतनी जैसी वर्त-
मान समयमें है वैसी आगे न थी। और
न ऐसी [illegible] थी कि. जिनके
[illegible] हैं। कोई

कहें कि,अगले समयमें तो बडे२कवि बहुतसे हुए हैं, विद्या कम क्यों थी ? तो उसका उत्तर यह है,कि जो तुम यह समझते हो कि, आगे इतने कवि होगये सो एक तो छोटे बडे आगेके सर्व कवि एकत्र करो, तो हजार मुश्किलसे होवेंगे फिर ये भिन्न २ समयमें दो २ एक २ होते रहे हैं। दो चार हजार वर्षमें हुए हैं परंतु वर्तमान समयमें तो हजा· रसे ऊपर अच्छे कवि भारतवर्षमें विद्वान् पण्डित निकलेंगे। और ऐसे वैसे वो दश बीस हजार होवेंगे। अगले समयमें संस्कृत मातृभाषा थी इसलिये उनके पढनेमें अबकी- सी कठिनता न थी और न भाषाकी काव्यके मुवाफिक अनुप्रासमिलानेआदिकी चातुर्यता थी सिर्फ आशय गंभीर रखनाही मुख्य था।

३७-पाठ.

पृथ्वी गोल पिंडहै इसके दृढ प्रमाण ।

दृढ=मजबूत	मस्तूल=जहाजका ऊर्ध्वभाग
सदृश=समान	ध्रुव=निश्चल केंद्रस्थान
पिंड=गोलाटस	पौन=चारभागमें तीनभाग
वास्तव=यथार्थ	सप्तऋषि=साततारे ऋषियोंके नाम

यह पृथ्वी जिसपर हम सर्वमनुष्यादि जीवधारी रहतेहैं,नारंगीके सदृशगोलपिंडहै इसका घेरा२५०२०मीलहै । इसपर एशिया यूरोप मिलकर जोएकमहाद्वीप है उसे अँगरेजोंनेदो करके लिखा है वास्तवमें इन दोनोंकाएकही महाद्वीपहै।(दूसरा अफ्रीकामहाद्वीपहै)पहिले स्वेजमध्यस्वेजकेकारणयह भीमिलाथामगर उसको तोडकरजुदाना कर दिया गया इससे अलग होगयाहै । तीसरी आस्ट्रेलियामहाद्वीप ये तब पुरानी दुनिया कहलाते हैं ॥ और चौथा अमेरिका महाद्वीपहै इसको नीदो

[illegible] होताहै [illegible]

पृथ्वीकी गुलाईकी ओटमें छुपा रहताहै। फिर क्रम२ से जैसा २ जहाज निकट आता जाताहै तैसे२ और२ भागभी दीखते जाते हैं [illegible] तलतक दीखने लगता है। यदि पृथ्वी गोल न होतीतो जहाज सब एकहीबार दीखता दूरीके कारण छोटा भलेही दीखता परंतु दीखता सब (३) तीसरे इंद्रधनुप जो पड़ताहै इससे भी पृथ्वीकी गुलाई प्रगटहोती है क्योंकि जब सबेरे इंद्रधनुप पड़ताहै। तब सूर्य पूर्व में रहनेसे पश्चिममें पड़ताहै। पृथ्वी की [illegible] धनुपाकार पड़-ताहै [illegible] पड़ती पृथ्वीकी गुलाईके सबबसे पड़ताहै। और जैसा दिन चढ़ताहै इंद्रधनुप नीचा होताजाता है और जो दुपहर [illegible] फिर नहीं पड़ [illegible]

३८-पाठ.

इन्द्रधनुष।

इन्द्रधनुष=मेघकी कमान	स्वच्छ=साफ
किरणें=सूर्य प्रकाशकी धारें	मूल=असल
पृथक् २=जुदे २	मिश्रित=मिले हुए
कमानी=कमान	भिन्न २=जुदे २

इंद्र या मघवा मेघका नाम है। इसीलिये अर्थात् बरसते हुए बादलपर जो सूर्यकी किरणें पड़नेसे उसमें कमानके आकार सात रंगोंकी पृथक् २ रेखा दृष्टि पड़ती हैं उन्हें इन्द्रधनुष कहते हैं। वास्तवमें इन्द्रधनुष पड़नेका कारण यह है कि, जब सवेरेके समय पूर्वमें बादल न होवें और सूर्यकी किरणें स्वच्छ होवें और पश्चिममें पानी बरसता होवे तो बीचके मनुष्यको पश्चिम इन्द्रधनुष दिखाता। सूर्यकी किरणोंमें सात रंग हैं। तीन नीला, पीला, लाल ये मूल रंग हैं। और

पश्चिममें पडताहै, वह जैसा सूर्य ऊंचा होता जाता है तैसा २ नीचा होता जाता है और साँझके समयका इंद्रधनुष जैसा २ सूर्य नीचा होता जाता है वह ऊंचा होता जाता है। कभी२ तल ऊपर दो कमानें दृष्टि पड़ती हैं उनमेंसे नीचेवाली चटक रंग की असली और ऊपरवाली कुछ फीके रंगकी उसीकी प्रतिभा होती है। उसके रंगभी पहिले से विरुद्ध रहते हैं जैसे दर्पणमें मुख देखनेसे दाहिने अंग बायें और बायें दाहिने दृष्टि पड़ते हैं। तैसही उसके रंग भी उलटे नीचेके ऊपर ऊपरके नीचे दीख पड़ते हैं। इन्द्रधनुष सबेरे नौबजे तक और सांझको तीन बजेसे सांझतक पड़ सकता है मध्य-के छः घंटोंमें इन्द्रधनुष कदापि नहीं पड़ताहै। तैसेही उत्तर दक्षिणमें भी नहीं पड़ता है॥

जो वेश्या ना मिले रमें परनारि जाय तहां माराहै॥सज्जन श्रवण सुनत घिन करते खल गणने अखत्यारा है ॥२॥ लखपतीका बेटा भी जुएमें हारा चोरी करताहै॥ प्रथम चुरावे घरका धन ना मिले तो परका हरताहै॥वस्त्राभरण लुगाई और लडकोंको दावपर धरता ॥ कुवचन कष्ट यहां सहकर मरके दुर्गतमें परता है ॥ खेलनकी क्या बात तमाशा भी इसका नाकाराहै ॥ सज्जन श्रवण सुनत घिनकरते खलगणने अखत्यारा है ॥ ३ ॥ राजा नल अरु भूप युधिष्ठिर राजपाट गृह हारे सब ॥ वस्त्राभरण रहित भटके बन २ में मारे२ सब ॥राजोंकी यह दशा भई तो फिर क्या रंक बिचारे सब॥बुद्धिमान लखिके हित [illegible] मानो वचन हमारे सब ॥ मन मतंग प-[illegible] [illegible] भाना है॥सज्ज- [illegible] करत [illegible] खलगणने अखत्या- रा [illegible]

राहे॥४॥होय दिवाली खुलेंदिवालीबहुतोंने
यह खेल जुआ॥कोई तास सुरही चौपड़
कोई खेले नक्की और दुआ॥बुद्धिमानलड्डू
पेडे खातेजाते और मालपुआ॥खाय मनावें
खुशी दिवालीका उनके त्योहार हुआ॥
नाथूराम नर पशु विवेक बिन जिन यह
जुआ पसारा है॥ सज्जन श्रवण सुनत घिन
करते खलगणने अखत्यारा है॥ ५॥

४०–पाठ.

सन् १८५७ का बलवा।

बलवा=गदर	धर्मभ्रष्ट=अधर्मी
पल्टन=१००० सिपाही फौजी	बैकुंठ=स्वर्ग
कम्पनी=१०० सिपाहीफौजी	दस्तूर=रीति चलन
चर्बी=मजा	मुल्क=देश.

यह बलवा इस अफवाहपर हुआथा कि,
अँगरेजी सर्कारपल्टनोंके हिन्दू सिपाहियोंसे
गायकी चर्बीमले और मुसल्मान सिपाहियों-
से सुअरकी चर्बीमले कार्तूसदांतसे कटवाकर

इनको धर्मभ्रष्टकरेगी। वस इसी झूठेअफवा-
हपर बेपढ़ेलिखे अनाडी सिपाही हिन्दुस्था-
नका अकाज कर अपनी जानपर खेलगये।
अविचारसे कोई काम किया जावे तो इसका
परिणाम अच्छा नहीं होता है प्रथम तो जो
कारतूसोंपर चर्बीलगाईथी,वहइन्फन्डरेफल
नामकी बन्दूकोंकी नली तंगहोनेसे गोलीफँस
रहनेके भयसे लगाई गई थी यह खयालबि-
लकुल गलत है कि, चर्बी धर्मभ्रष्ट करनेकी
नीयतसे लगाई गई। यह नहीं वहतो उन्होंने -
अपने मुल्कके दस्तूर बमूजिब लगवाईथी।
कारण कि, विलायतमें तेल घीकी अपेक्षा
चर्बी बहुत सस्तीऔर अधिकचिकनी होतीहै
इतना अविचारसे दोष इनका निःसंदेह रहा
कि, एक तो सिपाहियोंको इन्कार करने-
पर समझाने दिलासा देनेके बदले बहुतोंको
[illegible] किया या कैद आदि दंड दे सब

चोर २ मौसयाते भाई

राहे॥४॥होय दिवाली खुलेंदिवालीबहुतों
यह खोल जुआ॥कोई तास सुरही चौप
कोई खेले नक्की और दुआ॥बुद्धिमानलड्
पेडे खातेजाते और मालपुआ॥खाय मनां
खुशी दिवालीका उनके त्योहार हुआ
नाथूराम नर पशु विवेक बिन जिन य
जुआ पसार है ॥ सज्जन श्रवण सुनत घि
करते खलगणने अखत्यारा है ॥ ५ ॥

४०–पाठ.

सन् १८५७ का बलवा ।

बलवा=गदर	धर्मभ्रष्ट=अधर्मी
पल्टन=१००० सिपाही फौजी	बैकुंठ=स्वर्ग
कम्पनी=१०० सिपाहीफौजी	दस्तूर=रीति चलन
चर्बी=मज्जा	मुल्क=देश.

यह बलवा इस अफवाहपर हुआथा कि
अँगरेजी सर्कारपल्टनोंकेहिन्दू सिपाहियोंमे
गायकी चर्बीमिले और मुसलमान सिपाहियों
से सुअरकी चर्बीमिले कार्तूसदांतोंसे कटवाकर

नको धर्मभ्रष्टकरेगी। वस इसी झूठेअफवा-
पर वेपढ़ेलिखे अनाडी सिपाही हिन्दुस्था-
का अकाज कर अपनी जानपर खेलगये।
अविचारसे कोई काम किया जावे तो इसका
परिणाम अच्छा नहीं होता है प्रथम तो जो
कारतूसोंपर चर्बीलगाईथी,वहइन्फन्डरेफल
नामकी वन्दूकोंकी नली तंगहोनेसे गोलीफँस
रहनेके भयसे लगाई गई थी यह खयालवि-
लकुल गलत है कि, चर्बी धर्मभ्रष्ट करनेकी
नीयतसे लगाई गई। यह नहीं वहतो उन्होंने
अपने मुल्कके दस्तूर वमूजिव लगवाईथी।
कारण कि, विलायतमें तेल घीकी अपेक्षा
चर्बी वहुत सस्तीऔर अधिकचिकनी होतीहै
इतना अविचारसे दोष उनका निःसंदेह रहा
कि, एक तो सिपाहियोंको इन्कार करने
पर समझाने दिलासा देनेके वदले वहुतोंने
[illegible] किसा या कैद आदि दंड देकर

खाश्तकी। एक सिपाही व जमादारको फाँसी
लगादी सन्नहीं पल्टनके दो सिपाही काले-
पानीको जन्मकैद भेजे। गवर्नर जनरलने
अपनी विपरीत समझसे यह समझा कि,
ऐसा करनेसे सिपाहियोंके ऊपर दवदवा
जमेगा। यह न समझे कि, उनके जलेहुए
जिगरपर और भी फफोले पड़ेंगे। वस नौ
मईको मेरठके पचासी सवार कार्तूश न लेनेसे
६ वर्षको कैद किये। यह उनकी हतक देख
दशवीं मईको सिपाहियोंने वलवा किया। लैन
जलादी। कैदी छोड़ दिये। मेमवच्चे सवकाट
डाले। बाईस सौ गोरे सवार पैदलथे। रातको
दिल्लीको चल दिये। वहां भी वलवाहुआ। सब
गोरे मारेगये। बहादुरशाह जो पैंशनदार थे,
बादशाह हुए। सरकारी खजानालूटलियाकैदी
छोड़ दिये। फिरआजमगढ़ जौनपुर वना-

करीब अंगरेज बालबच्चों समेत नावोंमें
ठकर गंगाकी धारामें कानपुर नानाकीश-
णमें आते थे। वे सबके सब गंगामें डुबा-
येगये। अठारह जूनको फतेहगढ़ (फर्रु-
ाबाद)में भी बलवा हुआ। वहांका नव्वाब
फज़ुलहुसेनखां बलवाइयोंका सर्दार बना
डकाही था इसकी मा बेगम फसादकी
ड बनी। लखनऊमें हेनरी लारेन्स चीफ
मिश्नर थे। तीस जूनकी बस्तीसे बाहर
काम कर चीलहटमें बागियोंसे मुकाबिला
केया। बागी बहुत थे और हिंदुस्थानी गो-
ंदाजोंने धोखादिया। तब सब अँगरेजोंको
ाल बच्चे समेत लेकर वेलीगार्ड रेजीडेंटीमें
चले आये और दुमंजला कोठीपर सब रहे।
और बलवाइयोंको वहींसे फटकारते रहे। जू-
नमेंही रुहेलखंडभी बिगडा। बरेलीके नव्वाब
बहादुरखां बलवाइयोंके सर्दार बने। मऊ-

लाहौर आदि सब ओरसे फौज जमा होनेको हुक्म दिया। पंजाबके लेफटनेन्ट गवर्नरकमान्डर इन् चीफको सात हजार फौज देकर भेजा। सो कर्नालहोकर आठवीं जूनको दिल्लीकी पहाड़ी पर दाखिल हुए। चौदहवीं जूनतक लड भिरकर दिल्लीके शहर पनाहतक पहुँचे और उसकी अंदर मोरचा जमाये। फिर चार दिन गलीकूँचोंमें जगह २ लडाई हुई। इंच २ पर लाशें गिरीं। बेशुमार बलवाई मारे गये उन्नीसवींको अँगरेजी फौजने किला आ लेलिया। और तमाम दिल्ली बलवाइयोंसे खाली होगई। घायल मिलकर सब चारहजार सर्कारी सिपाही काम आये मगर बलवाई बेशुमार मारे गये। यह लडाई दिल्लीवालोंको उमरतक न भूलेगी। बादशाहबेगम रंगून कैद भेजे गये सो वहांहीमरे। उधर जनरल हैवलाक साहिब दो हजार गोरे और हिंदुस्या-

नियोंको लेकर जुलाईके शुरूमें इलाहाबादसे चले। सो बारहवींको फतेपुर पंद्रहवींको पांड़ नदीके किनारे नानासाहिबकी सेनाको और सोलहवींको खुद नानासाहिबको शिकस्त दी। सत्रहवींको कानपुरमें दाखिल हुए फिर जनरल ऊटरमके आयजानेपर लडते भिड़ते हटते बढते चौबीसवीं सितम्बरको लखनऊ पहुँचे और रेजीडेन्टी वालोंके शामिल हुए। और नववीं नवम्बरको नये कमान्डर इन् चीफ सर कालिन केम्बल जो पीछे लार्ड क्लाइड कहलाये। चार हजार फौजलेकरकानपुरसे लखनऊ पहुँचे। और बडी होशियारीसे बेलगार्डवाले अँगरेजोंको जो घिरे हुए थे लेकर कानपुर चले आये। ऊटरम साहिब फौज सहित लखनऊ घेरे रहे। कमान्डर इन् चीफने कानपुरके आस

पासके सर्व बागी जेर किये। जब सुप्रबंध होगया तब दोसौ तोप वीस हजार सिपाही लेकर लखनऊपर चढे और शुरू मार्च सन् १८५६ ई० को लखनऊमें शहरके सामने मोर्चे जा जमाये इधर नैपालके महाराज सर जंगवहादुर आठ हजार लडाके गोरखे लिये सर्कारको मददको लडते भिडते बागियोंको जेर करते लखनऊ पहुँचे। छठवीं मार्चसे लडाई शुरू हुई। ग्यारवींको लोहेके पुलपर सर्कारी कब्जा होगया। चौदहवींसे सोलहवींतक गलीकूचोंमें खूबगोली चली सर्कारी फौज रोसमें भरी हुईथी। इधर बागी नाउम्मेद हुए बहुतसे मारे गये। बाकी भाग गये। कुछ पकडेभीगये। नानाला दिल्लीसंगम और बिर्जीसकद्र नैपालकी ओर भाग गये सर्कारी फौजको खूब लूट हाथ लगी। दिहा लखनऊके दूसरोंदी बागी फिर

तितर होगये । जिधरको मार्ग पाया उधरही को घबराकर भागे । और जिधरसे निकले छूटते मारते इधर उधर भटकते सन् १८५८ के आखिर होते २ जीते बचे सो सब पकड़े गये और दंड पाया । फिर सर्कारी इन्तजाम पहिलेसेभी अत्यन्त दृढ हुआ । परन्तु इस अपराधमें पार्लमेंटकी रायसे कम्पनीसे राज्य छीनलिया गया कि न लाग ठीक २ प्रबन्ध न करसके इसलिये श्रीमती महारानीने राज्य प्रबन्ध अपने अधिकारमें किया । सो ५६ वर्षतक कम्पनीका राज्य रहा ॥

इति हिन्दीकी तीसरी पुस्तक समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्ण[illegible]

श्रीवेंकटेश्वर [illegible]